kissekahani.com

जिन्हें हमने देशके सर्वोच्च पदपर आसीन किया है–

फोटो : राहुल आर्ट गेंदा फोटो सर्विस

राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसेन

भारत एक घर

- मैं समझता हूं कि तुम फूलोंको और पौधोंको पसंद करते हो । मैं चाहता हूं तुम सब उन फूलोंके समान हो । और हम सब इस महान् और खूबसूरत देश भारतमें रहते हैं । हम सब, इसीलिए भारत के बगीचेके फूल बननेकी कोशिश करें । हमें अपने देशको एक खूबसूरत बगीचा बनाना है, जहां बहुत सारे खूबसूरत फूल हों । ताकि भारत का हर बच्चा इस बगीचेमें बढ़े और इस बगीचेको अच्छा बनाये रखनेमें मदद दे ।

- देशके माने क्या हैं? देश तो लम्बी-चौड़ी चीज है लेकिन यही तो देश नहीं है, देश के माने हो जाते हैं कि देश के रहने वाले । और भी माने हैं, लेकिन खासकर देशके रहने वाले । करोड़ों आदमी हमारे देशमें रहते हैं । हम इन लोगों की कैसे सेवा करें; क्या इधर-उधर दौड़धूप किया करें? हम देशमें एक ऐसी हवा पैदा करें, जिससे सारे देश के रहने वाले एक बड़ा परिवार हो जायें, एक बड़ा खानदान हो जायें ।

- जैसे तुम अपने घर में रहते हो और मिलजुलके, वैसे सारे देशके लोग मिल-जुलके रहें और समझें कि हमारा बड़ा भारी यह भारतका एक परिवार है । एक दूसरेकी मदद करें, एक दूसरेकी सहायता करें और मिल कर सहयोग से सब काम करें ।.... अकेली ताकत कम होती है, मिलकर ताकत बहुत हो जाती है ।.... सोचो, अगर हम मिलके सब काम करें, तो कितने बड़े काम हो जायें । हमारे देश के चालीस करोड़ लोग मिलके काम करें, तो सारे देशका रूप बदल जायेगा । चेहरा बदल जायेगा ।

- तो जो हम करते हैं, वह सब तो भारतकी कहानीका एक छोटा सा अंश है, हिस्सा है । अजीब बात है कि हम हर समय कहानी बना रहे हैं । तब हमें ऐसी कहानी लिखनी चाहिए न, ठीक बाद में लोग देखें कि हां उन लोगोंने कहानी लिखी, अपनी अच्छी बातों से देश को मजबूत किया, देश की तरक्की की, देश में जो खराबियां हैं, उनको निकाल दिया ।

भारत मेरा देश

- मैं समझता हूं कि तुम फूलोंको और पौधोंको पसंद करते हो । मैं चाहता हूं तुम सब उन फूलोंके समान हो । और हम सब इस महान् और खूबसूरत देश भारतमें रहते हैं । हम सब, इसीलिए भारत के बगीचेके फूल बननेकी कोशिश करें । हमें अपने देशको एक खूबसूरत बगीचा बनाना है, जहां बहुत सारे खूबसूरत फूल हों । ताकि भारत का हर बच्चा इस बगीचेमें बढ़े और इस बगीचेको अच्छा बनाये रखनेमें मदद दे ।

- देशके माने क्या हैं? देश तो लम्बी-चौड़ी चीज है लेकिन यही तो देश नहीं है, देश के माने हो जाते हैं कि देश के रहने वाले । और भी माने हैं, लेकिन खासकर देशके रहने वाले । करोड़ों आदमी हमारे देशमें रहते हैं । हम इन लोगों की कैसे सेवा करें; क्या इधर-उधर दौड़धूप किया करें? हम देशमें एक ऐसी हवा पैदा करें, जिससे सारे देश के रहने वाले एक बड़ा परिवार हो जायें, एक बड़ा खान-दान हो जायें ।

- जैसे तुम अपने घर में रहते हो और मिलजुलके, वैसे सारे देशके लोग मिल-जुलके रहें और समझें कि हमारा बड़ा भारी यह भारतका एक परिवार है । एक दूसरेकी मदद करें, एक दूसरेकी सहायता करें और मिल कर सहयोग से सब काम करें ।.... अकेली ताकत कम होती है, मिलकर ताकत बहुत हो जाती है ।.... सोचो, अगर हम मिलके सब काम करें, तो कितने बड़े काम हो जायें । हमारे देश के चालीस करोड़ लोग मिलके काम करें, तो सारे देशका रूप बदल जायेगा । चेहरा बदल जायेगा ।

- तो जो हम करते हैं, वह सब तो भारतकी कहानीका एक छोटा सा अंश है, हिस्सा है । अजीब बात है कि हम हर समय कहानी बना रहे हैं । तब हमें ऐसी कहानी लिखनी चाहिए न, कि बाद में लोग देखें कि हां उन लोगोंने कहानी लिखी, अपनी अच्छी बातों से देश को मजबूत किया, देश की तरक्की की, देश में जो खराबियां हैं, उनको निकाल दिया ।

पब्लिक लाइब्रेरी पुस्तकालय

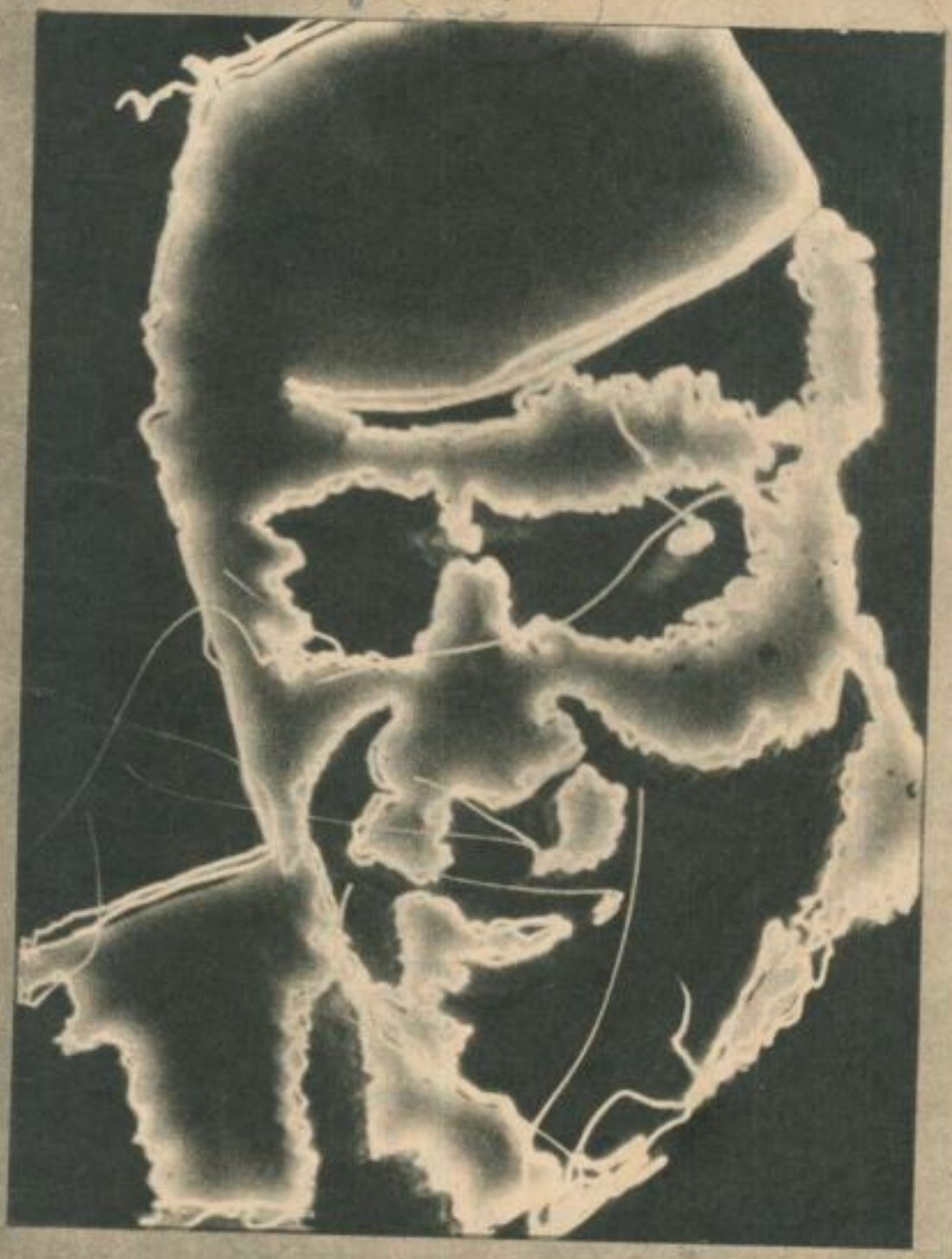

चाचा नेहरू

इंद्रजीत द्वारा अपनी ही पेंटिंगपर जलते हुए बल्ब को घुमाकर लिया हुआ स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू का फोटो चित्र

kissekahani.com

कुछ अटपटे कुछ चटपटे

सुधीरकुमार सिंह गहरवार, रायपुर :
यदि रावणके पास फायर ब्रिगेड होती, तो क्या लंका जलनेसे बच जाती?
तब हनुमानजीकी पूछमें नेपाम बम बंध होते!

नुजहत मलीक, भोपाल :
गुस्सा किस चीजसे ठंडा किया जाता है?
सिर खुजानेसे!

कु० वीना शर्मा, आदिपुर (कच्छ) :
नाखून क्यों बढ़ते हैं?
सूतके कारण!

पवनकुमार, बम्बई–७१ :
लखनऊके 'बांके' और बम्बईके 'दादा' में क्या फर्क है?
लखनऊमें बच्चोंके बांके नहीं होते, बम्बईमें बच्चोंके दादा भी मौजूद हैं—हः हः !

सुनीलकुमार गौड़, बीकानेर :
मुसीबतके समय लोग गधेको ही बाप क्यों बनाते हैं, घोड़े या अन्य जानवरको क्यों नहीं?
गधेमें अपने अनुकूल मनोविज्ञान पानेके कारण!

नागेश्वर राव, राउरकेला–२ :
उल्लूकी आंखें रातको खुलती हैं, लेकिन अक्लके अंधोंकी आंखें कब खुलती हैं?
जब दिनमें ही रात दिखाई देने लगती है!

मोहनलाल अग्रवाल, हैदराबाद :
आशा और लालचमें क्या अंतर है?
जो बुझने वाली और न बुझने वाली प्यासमें होता है!

स्वतंत्र, नई दिल्ली– ५ :
मैं केवल मुस्कराते चेहरे देखना चाहता हूं, मुझे क्या करना चाहिए?
अपने माथेपर 'मूर्ख' का साइन बोर्ड लगा लेना चाहिए!

भारतभूषण अग्रवाल, नई दिल्ली–२३ :
यह किस प्रकार मापा जा सकता है कि किसीकी आंखोंमें खुशीके आंसू हैं या गमके?
उसका इंटरव्यू लेकर!

रीना श्रीवास्तव, गोरखपुर :
क्या पत्नी ऐसी होनी चाहिए, जो घरको स्वर्ग और घरवालोंको स्वर्गवासी बना दे?
जरूर! लेकिन नेतृत्व भी स्वयं करना चाहिए!

हरिशंकरलाल श्रीवास्तव, गोरखपुर :
ज्ञानकी पतंग किस समय उड़ानी चाहिए?
जब परीक्षा-- पर सामने हो!

गुरुदीप सिंह, हिसार :
इस महंगाईमें ऐसी भी कोई वस्तु है, जिसका मूल्य सस्ता हो गया हो?
रुपया!

भैयालाल साहू, पिपरिया :
मैं एक यात्री हूं तथा बिना टिकट यात्रा कर रहा हूं। जिस डिब्बेमें मैं बैठा हूं उसीमें चेकर आ गया—क्या करूं?
अभी चेकरको रोके रखो, हम बिना टिकट सफर करने वालोंकी यूनियन बनवा रहे हैं!

सोहनलाल, गाजियाबाद :
दूसरे देशों द्वारा दिए गए अन्नदानको सरकार 'भिक्षा' न कहकर 'उपहार' क्यों कहती है?
जिससे देने वालोंके दिमाग न चढ़ जाएं!

बचनेश्वरप्रसाद सिंह, रूपस (पटना) :
रात अंधेरी क्यों होती है?
बच्चोंके परीदेश चले जानेके कारण!

अनिलकुमार, आगरा :
तलवारका घाव तो भर जाता है, किंतु अपमानका घाव क्यों नहीं भरता?
अपमान सहने वालेके पास तलवार न होनेके कारण!

सुभाषचंद्र भट्ट कानपुर :
मां-बापके ऋण और महाजनके ऋणमें अंतर?
पहला ऋण चुकाते चुकाते पत्नीके लिए जेवर गढ़वाने पड़ते हैं, दूसरेमें उन्हें बेचना तक पड़ जाता है!

एस. पी. वर्मा, साहेबगंज :
व्याकरणके क्रिया-कर्म और मनुष्यके क्रिया-कर्ममें क्या अंतर है?
पहले क्रिया-कर्मपर परीक्षा भवनमें रोते हैं, दूसरेपर श्मशान में!

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा न भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता, याद कर लो: संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)' पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१

अशोककुमार शर्मा, सोजीपत :
अगर कोई रंगमें भंग डालनेके बजाए भंगमें रंग डाल दे, तो?
तो भंग पीने वाला दंग रह जाए!

बृजेशकुमार, पेन्डरा :
इनसान जब सजासे डरता है, तो गुनाह क्यों करता है?
क्योंकि उसे मजा चाहिए, सजा नहीं!

रतनलाल जागेरिया, भूपालगंज :
कहते हैं आंखोंसे देखी बात सत्य और कानोंसे सुनी बात असत्य होती है, तो किसीको कोई बात सच्ची बतानेके लिए क्या करूं?
उसकी तरफ आंखें निकालो!

मनजीतसिंह, छाबड़ा, कवर्धा :
मेरी खटमलों और मच्छरोंसे कोई दुश्मनी नहीं है, परंतु रातको चुपके चुपके खटमल पैटन टैंक लेकर और मच्छर सैबर जेट लेकर मुझपर हमला क्यों करते हैं?
तुम्हारे बिस्तरेको काश्मीर समझकर!

मगनलाल बाठिया, दुर्ग :
दुनियामें अंधे ज्यादा हैं या आंखवाले?
इस प्रश्नपर उत्तर देनेपर बीरबलको सोनेकी मोहरोंकी एक थैली मिली थी!

श्रवणकुमार भगत, चित्तरंजन :
क्या आपके पास कोई ऐसी ऐनक है, जिसे पहनकर मैं जिस पुस्तकको देखूं, मुझे प्यारा 'पराग' नजर आए?
ऐनककी क्या जरूरत है?—परागको ही हर पुस्तककी जगह रखकर देख लो!

नारायणदास हेड़ा, खिरकिया :
बीरबलकी समझमें सत्य और असत्यमें चार अंगुलका अंतर था, तो आपकी समझमें?
हमें खुशी है कि बीरबल हमसे सहमत था!

मुमताज एम. डी, किशनगढ़ :
'छोटू और लंबू' त्योहारोंपर भी कपड़े नहीं बदलते—आखिर क्यों?
मंहगाई बहुत ज्यादा बढ़ जानेके कारण!

राजपाल दर्यानी, बम्बई-३१ :
नसीब कब खुलता है?
जब उसका मंत्र याद हो जाता है?—'खुल जा सिमसिम' की तरह!

इस्माइल खान, नागदा :
मीठा खानेके बाद चाय फीकी क्यों लगती है?
उसका अपमान हो जानेके कारण!

मिथिलेश, सीतापुर :
लोग लड़नेके लिए तयार होते समय कुर्तेकी बांहें क्यों चढ़ा लेते हैं?
चमड़ी जाए पर दमड़ा न जाए— इसी लिए!

मु. जमालहसन अन्सारी, तीनपहाड़ :
कहा जाता है कि प्राचीन भारतमें दूधकी नदियां बहती थीं, तो बाल कृष्णको गोपालन क्यों करना पड़ा?
नदियोंके उद्गम-स्थलपर निरंतर दूध लुढ़काते रहनेके लिए!

प्रेमचंद गोयल, तिनसुकिया :
मैं पिताजीकी नजरोंमें दामचोर, मालीकी नजरोंमें आमचोर और शिक्षककी नजरोंमें कामचोर, तो आपकी नजरोंमें?
चोर शिरोमणि!

★ प्रकाशचंद राय, द्वारा श्री टी. रा. राय, सर्वेयर, धनपुरी कालरी, पो. धनपुरी, जिला शहडोल (म. प्र.):
हर मांको अपने पुत्रका स्वास्थ्य गिरा हुआ क्यों लगता है?
क्योंकि माताएं अपने पुत्रोंके लिए एक पूरे अस्पताल का काम देती हैं!

★ दीपक कैनथ बेन्जामिन, द्वारा श्रीमती एन. बेन्जामिन, राजकीय कन्या विद्यालय, मैनपुरी, मैनपुरी (उ. प्र.) :
घुटे हुए सिरको चांद क्यों कहते हैं?
क्योंकि बुढ़िया अपने चरखेपर सारे बाल कात लेती है!

लॉन छोटा-सा था, मगर था बड़ा सुंदर, और हरा भरा।

दायीं ओर कोनेमें एक पौधेपर एक बड़ा-सा फूल खिला था– लाल रंगका। चारों तरफ तरह तरहके पौधों और नन्हे नन्हे फूलोंसे घिरा वह फूल ऐसा ही मालूम पड़ता था, जैसे सैकड़ों नन्हे-मुन्नोंके बीचमें खिसियाना-सा बैठा बूढ़ा संपादक दादा!

वैसे लॉनमें, इधर भी फूल थे उधर भी फूल थे—हर तरफ फूल ही फूल थे, मगर आने वालोंकी नजर जिसपर सबसे पहले पड़ती थी, वह था वही बड़ा-सा गुलाबका फूल– लाल रंगवाला। प्रीतिका यह दावा था कि वह फूल उसने अपने हाथोंसे लगाया था। सच भी था, क्योंकि पहले पहल जब वे इस फ्लैटमें आए थे, तो कंपाउंडमें जैसे वीरानी बरसती थी। कूड़े-करकटका चारों तरफ ढेर लगा था। लंबी लंबी घासोंके झुंड बेतरतीबीसे फैले हुए थे और जगह जगह कांटेदार झाड़ियां उग आई थीं। पुराना किरायेदार शायद बहुत लापरवाह रहा होगा

कहानी

गुलाब का फूल

kissekahani.com

या फिर बदशौक और रूखी तबीअतका, ऐसा लगता था।

इस घरमें आते ही सबसे पहले प्रीतिके भैयाने पूरे कंपाउंडकी सफाई करवाई और नौकरोंके साथ लॉन ठीक करनेमें पिल पड़े। कई रोज तक काम चलता रहा। फिर फूलोंके नमूने आए, सुंदर पत्तोंवाले पौधे इकट्ठा किए गए और फूलोंकी कलमें तराशी गईं। इस तरह छोटा-मोटा एक बाग-सा बनने लगा।

प्रीतिको बागवानीका बहुत शौक था। फूल भी उसे पसंद थे—हर रंगवाले फूल। इसलिए वह भी अपने भैयाके कामोंमें पूरा सहयोग देती रही। उसने भी दो एक कुदालें चलाईं, पानीकी कुछ बाल्टियां भरीं, पौधोंमें उंडेलीं।

गुलाबका वह पौधा, उसने स्कूलके मालीसे प्राप्त किया था। प्रीति अक्सर स्कूलमें बूढ़े माली-की सहायता कर दिया करती थी। इसलिए वह उससे प्रसन्न रहा करता था। ज्यों ज्यों पौधा बढ़ता रहा, प्रीतिकी खुशी भी बढ़ती गई और वह उसकी सेवा भी बड़े प्रेमसे करने लगी।

और जब उसमें पहला फूल खिला, तो प्रीति को लगा जैसे उसकी जिम्मेदारी बढ़ गई है। बस फिर क्या था-- कभी गुलाबकी जड़ें ठीक की जा रही हैं, तो कभी अगल-बगलके बेकार पौधे साफ किए जा रहे हैं।

अभी भी वह गुलाबके पास बैठी, बड़ी लगनसे उसकी पत्तियां पोंछ पोंछकर साफ कर रही थी। दिन ढल चुका था और सूरजकी अंतिम किरणें जैसे शीतलता बरसा रही थीं। पास ही प्रीतिके डैडी बैठे अखबार देख रहे थे।

अचानक किसी कारका हार्न बजा। प्रीतिने घूमकर देखा, गहरे हरे रंगकी एक चमकीली-सी कार गेटके पास खड़ी थी। पिछली सीटपर कोई लाल चमड़ीवाला विदेशी बैठा नजर आया।

जोसेफ अंकल! प्रीतिने देखा और उठ खड़ी हुई। प्रीतिके डैडी भी उठकर 'हलो' कहते हुए लपके। प्रीतिने भी बढ़ना चाहा, मगर ठिठककर रुक गई। अंकल जोसेफके साथ एक ग्यारह-बारह बरसका लड़का भी उतर रहा था। पता नहीं क्यों, प्रीतिको लाल बंदरकी सूरत याद आ गई। लाल लाल गाल और नीली नीली आंखें—बिल्कुल बंदर-सा! छि:!

अब वे लोग नजदीक आ गए थे।

प्रीतिने हाथ जोड़ दिए। अंकलने खुशीमें उसे गोदमें भर लिया।

"हलो बेबी, ठीक तो हो", उन्होंने कहा,

—फजलुल बारी

"तुम्हारे लिए अ
लाया है . . .
प्रीति कुछ
चुंधी आंखोंसे उ
खराब लगा।
जोसेफ अं
तुम्हारे जोसेफ

"तुम्हारे लिए आज हम एक बड़ा अच्छा दोस्त लाया है . . . क्यों मिलोगी उससे?"

प्रीति कुछ नहीं बोली। गोरा लड़का चुंधी चुंधी आंखोंसे उसे ही घूर रहा था। प्रीतिको बड़ा खराब लगा।

जोसेफ अंकलने कहा, "यह माइकेल है, तुम्हारे जोसेफ अंकलका लड़का। कल ही लंदन-से आया है।" फिर उन्होंने माइकेलसे अंग्रेजीमें कुछ कहा और प्रीतिका नाम बताया।

माइकेलने अपने पिताकी ओर देखकर पूछा, "पर्रेट्टी?"

प्रीतिको लगा जैसे उसके कंठमें बड़ा-सा आलू फंसा हो। प्रीतिको 'पर्रेट्टी' कहता है। उसे हंसी आ गई।

माइकेलने प्रीतिके अभिवादनमें अपने हाथ जोड़ दिए थे। प्रीतिके डैडी हंस पड़े। प्रीति खिसियानी हो गई। हाथ उसे जोड़ने थे– वह छोटी थी उससे। सभी वहीं लॉन पर बैठ गए। डैडी और अंकल तो अंग्रेजीकी टांग तोड़नेपर उतारू हो गए, मगर प्रीति बोर होने लगी। उसने माइकेलको देखा। वह आंखें फाड़े फूलके पौधोंको देख रहा था। बिल्कुल नदीदा है। प्रीतिने होंठ बिचकाए–'ऊंह!'

अचानक माइकेलने अपने डैडीसे अंग्रेजीमें कुछ कहा। जोसेफ अंकलने घूमकर फूलोंके झुंडको देखा। फिर प्रीतिके डैडीने प्रीतिकी ओर इशारा करके कुछ बताया। प्रीतिकी गर्दन कुछ कड़ी हो गई—भला वह अपनी प्रशंसा भी नहीं समझ पाती।

माइकेल अब उस बड़े गुलाबको देख रहा था, अपनी नीली गुजगुजी आंखोंसे!

अंकल जोसेफने प्रीतिकी तरफ देखा, "बेबी, माइकेलको तुम्हारा गुलाब बहुत पसंद आया।" प्रीतिको माइकेलकी यही एक बात अच्छी लगी। उन्होंने आगे कहा, "माइकेल कहता है, वह फूल वह अपने कोटमें लगाना चाहता है। क्या तुम दोगी? बड़ा सुंदर लगेगा!"

प्रीति जैसे आसमानसे गिरी। उसे यह मांग अच्छी नहीं लगी। इतनी मेहनतपर एक फूल खिला, उसे भी तोड़ना चाहता है। फूल लगाएं हम, कोट सजाएं यह—अरे वाह रे, उसने चाहा कि इनकार कर दे। मगर प्रीतिके डैडीने कहा, "माइकेल, तुम्हारा मेहमान है! तुम्हें उसकी इज्जत करनी चाहिए। उसे हिन्दी आती नहीं वरना अब तक वह तुम्हें अपना दोस्त बना लेता। एक फूलका क्या है! कल फिर खिल जाएगा–मगर माइकेल तो रोज आएगा नहीं।"

प्रीति कुछ बोल न सकी। उसका दिल रुंध गया। आंखोंमें आंसू आते आते रह गए। जब वह गुलाब तोड़ने लगी, तो उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई उसकी गर्दन काट रहा है।

फूल सचमुच सुंदर था और बड़ा-सा था। माइकेलने बड़ी खुशीसे फूलको सूंघा और बोला "व्हाट ए ब्यूटिफुल!"

प्रीतिका जी जल गया। बंदर-सा तो मुंह है–व्हाट ए ब्यूटिफुल! माइकेलने फूलको कोटमें लगाया, तो प्रीतिके डैडी बड़े खुश हुए। प्रीतिको बड़ा बुरा लगा।

उसके बाद माइकेल चला गया शाम होते होते। प्रीतिको ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे उसकी कोई बहुत बड़ी चीज लूट ली गई हो।

प्रीतिने सोचा था कि अब माइकेल रोज ही जोसेफ अंकलके साथ आया करेगा। मगर ऐसा नहीं हुआ। दो-तीन हफ्ते हो गए मगर न वह आया और न ही अंकल जोसेफ।

कुछ दिनोंके बाद एक रोज अंकल जोसेफका पत्र आया। उन्होंने लिखा था कि अभी वे दिल्लीमें हैं। किसी कामसे उन्हें अचानक यहां आना पड़ा। मगर अब वे जल्दी ही वापस लौट रहे हैं। उन्होंने प्रीतिको लिखा कि माइकेल अब कुछ हिन्दी सीख गया है —अब साफ बोल लेता है। आनेपर वह हिन्दीमें ही बातें करेगा।

प्रीतिने दिलमें कहा—मेरी बलासे मुझे क्या!

अंकल जोसेफका पत्र आए दो रोज हो चुके थे।

उस दिन प्रीतिकी आंखोंमें दर्द था। उनमें गहरी लाली छा गई थी, कुछ कुछ सूजन भी बढ़ी हुई थी। डाक्टरने दवा भेज दी थी, मगर दर्दके कारण प्रीति बाहर न निकल सकी। दिन भर बिस्तरपर पड़ी रही आंखें बंद किए किए।

शामको लेटे लेटे प्रीतिने अंकल जोसेफकी आवाज सुनी। ड्राइंग रूम बगलमें था और आवाज वहींसे आ रही थी। प्रीतिको लगा, माइकेल भी वहीं है और टूटी फूटी हिन्दीमें कुछ बोलनेकी कोशिश कर रहा है।

तभी मम्मीने बताया कि वे लोग उसे देखने अंदर आ रहे हैं। प्रीति सीधी होकर बैठ गई। आंखोंकी सूजन और बढ़ गई थी।

उसके डैडीके साथ
माइकेल भीतर आए। अंक
बपाए : "क्यों, बेबी, सु
आई है।" उन्होंने कहा,
कि नहीं अब तक?"

प्रीति कुछ नहीं बोली
चुपचाप खड़ा था।

"आंकमें आपका
गागल्ज पहनीए . . . है
हिन्दी बोलनेकी कोशिश
दिलमें हंस दी!

"ईशको लगाइए
चश्मा बढ़ाते हुए माइकेल
मिल जाएगा।"

प्रीतिको लगा, च
किस्मका था। उसके
माइकेलने चश्मा उसकी
प्रीतिको चश्मेसे सचमु
माइकेलने हंसकर उससे
चला गया।

सबोंके चले जानेके

छोटी छोटी ब

"क्यों भई, आज
खेलनेका दिन है,
बिलखक

उसके डैडीके साथ अंकल जोसेफ और माइकेल भीतर आए। अंकलने उसके गाल थपथपाए : "क्यों, बेबी, सुना है तुम्हारी आंख आई है।" उन्होंने कहा, "कैसी हो? दवा डाली कि नहीं अब तक?"

प्रीति कुछ नहीं बोली। माइकेल अब तक चुपचाप खड़ा था।

"आंकमें आपका टकलीप होगा शायड, गागल्ज पहनीए . . . है आपका पास?" उसने हिन्दी बोलनेकी कोशिश की। प्रीति दिल ही दिलमें हंस दी!

"ईशको लगाइए आंकपर," एक धूपका चश्मा बढ़ाते हुए माइकेलने कहा, "तोड़ा आराम मिल जाएगा।"

प्रीतिको लगा, चश्मा कीमती और अच्छे किस्मका था। उसके 'नहीं, नहीं' करनेपर भी माइकेलने चश्मा उसकी आंखोंपर चढ़ा दिया। प्रीतिको चश्मेसे सचमुच कुछ राहत मिली। माइकेलने हंसकर उससे एक फूल मांगा। फिर चला गया।

सबोंके चले जानेके बाद प्रीति फिर लेटकर चश्मा देखने लगी। बड़ा अच्छा छोटा-सा हरे शीशोंवाला चश्मा था।

थोड़ी ही देर बाद प्रीतिकी मम्मी एक छोटा-सा डिब्बा लिए हुए आईं।

उन्होंने कहा, "देख, माइकेल तुम्हारे लिए कितनी तरहके खिलौने दिल्लीसे लाया है।"

प्रीतिने देखा, उड़ने वाला छोटा-सा जेट, पानीमें डूबने वाली पनडुब्बी, सलामी दागने वाला फौजी और गोले छोड़ने वाला टैंक . . . और पता नहीं क्या क्या!

मम्मी उसे दिखाती रहीं और वह देखती रही।

माइकेल उसके लिए दिल्लीसे इतने सारे खिलौने लाया था और उस दिन वह गुलाबके छोटेसे फूलके लिए मुंह बना रही थी। वह सोचमें पड़ गई।

प्रीतिको लगा, माइकेल उसका वह गुलाबका फूल कोटमें नहीं, दिलमें लगानेके लिए मांग ले गया था। ●

अपर बाजार, ३३ मैकी रोड,
रांची (बिहार)।

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"क्यों भई, आज तो स्वतंत्रता-दिवस है, हंसने-खेलनेका दिन है, फिर तुम इस तरह बिलख बिलखकर क्यों रो रहे हो?"

"रोऊं नहीं, तो क्या करूं! मम्मी कहती हैं— आजादीके साथ गला फाड़कर रोओ, तुझे बहलाने को वक्त नहीं, घरमें मेहमान आने वाले हैं!"

छाया : सतेंद्र पारब

साहसिक कहानी

kissekahani.com

हिममानव को चाकलेट

– सुशीला देवेश

↑ सब लड़के मोड़ को पार करके अपने आखिरी पड़ाव पर पहुंच रहे थे

टोलीमेंसे अचानक दो लड़के गुम हो गए थे और अभी तक किसीको इसका पता न था।

अब हवा तेज चलने लगी थी और आरोही लड़कोंने अपने कानोंको मफलरोंसे अच्छी तरह ढांक लिया था।

चारों तरफ बरफका समुंदर फैला हुआ था। पहाड़की चोटी सूरजकी रोशनीसे चमक रही थी और नीचे तराईमें नीली छाया तिर आई थी।

छाया : सतेंद्र पारब

← ऐसे ही किसी शेरपा ने पर्वतारोही लड़कों का सामान ढोया होगा (छाया : ब्रह्मदेव)

शामके तीन बज रहे थे।

लड़कोंका दल पहाड़की चोटीके पासवाले पड़ाव तक पहुंचनेकी जल्दीमें था, ताकि दूसरे दिन सूरजकी पहली किरणोंके साथ वे चोटी-पर अपनी सफलताका झंडा फहरा सकें।

हालांकि बर्फीली हवा उनके कदमोंको कंपा-कंपा देती थी, लेकिन फिर भी वे सब बढ़ते जा रहे थे। उनका लीडर मास्टर रमेश दत्त आगे आगे चलकर उनका हौसला बढ़ा रहा था।

बम्बईके इन स्कूली लड़कोंको हिमालय-की इस पहाड़ीपर चढ़नेमें बड़ा आनंद आ रहा था। बलराम और मोहिंदर जो स्कूलमें शरा-रती लड़कोंमें गिने जाते थे, इस खुली जिंदगी-का सबसे ज्यादा मजा ले रहे थे। वे पहाड़की

↓ लड़के टोलियां बनाकर खोए साथियों की खोज में निकल पड़े

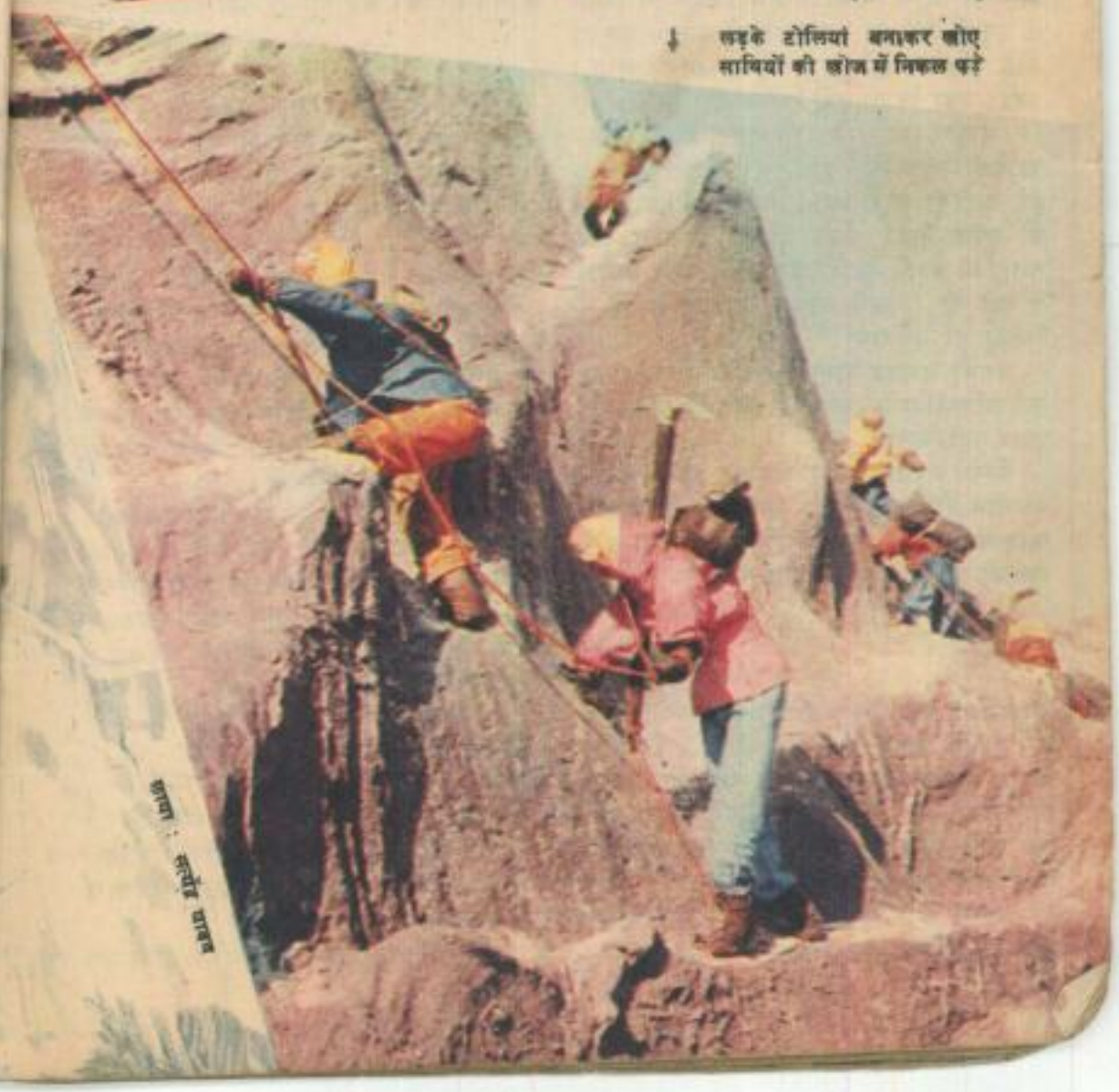

छाया : सुरेंद्र यादव

इस फिजामें नाचते-गाते, मजाक करते चल रहे थे।

अब सब लड़के एक घने मोड़को पार करके अपने आखिरी पड़ावपर पहुंच गए थे। सूरज छिपने जा रहा था। मास्टर रमेशने जान लेना चाहा कि कोई पीछे तो नहीं छूट गया।

उसने लड़कोंको एक खुली-सी जगहपर खड़ा करके गिनती शुरू की—एक बार, दो बार, तीन बार....ओह, यह क्या? दो लड़के कम हो रहे थे।

मास्टरका शरीर पसीने-पसीने हो गया। उसके पैरोंमें कंपकंपी छूटने लगी। उसे लगा कि सारा पहाड़ उसकी चारों ओर घूम रहा है।

एक क्षणके लिए उसकी आंखोंके सामने अंधेरा छा गया। बलराम और मोहिंदर कहीं पीछे छूट गए थे। अभी आध घंटा पहले तो रमेशने उनको देखा था। क्या मोड़से गुजरते हुए तो कोई दुर्घटना नहीं हो गई—वह सोचने लगा। कहीं उनका पैर तो नहीं फिसल गया।

मास्टर रमेशका सारा शरीर कांप उठा। उसने पहाड़की उस चोटीसे तीन हजार फीट नीचे फैली हुई घाटीकी ओर देखा। पहाड़के सीनेपर बर्फकी सफेद चादर फैली हुई थी। बहुत नीचे तलहटीमें बहती नदीकी एक नीली धारी दिखाई दे रही थी। उसने जोरकी आवाज लगाई—"मोहिंदर! बलराम!"

उसकी आवाज पासकी पहाड़ियोंसे टकराकर कई प्रतिध्वनियोंमें गूंज गई। लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

कैम्पमें अपना सामान पटककर उसने लड़कोंकी तीन टोलियां बनाकर उन्हें तीन दिशाओंमें खोए साथियोंको खोजनेके लिए भेज दिया और खुद भी अकेला एक और दिशाको निकल गया।

आकाशमें चांद निकल आया था। सभी टोलियां कैम्पमें वापस आ गई थीं। सारी खोज बेकार साबित हुई। रमेशने लड़कोंको खिला-पिलाकर भीतर आराम करनेके लिए कहा और खुद ओवरकोटको पहनकर बाहर एक बर्फीली चट्टानपर आकर बैठ गया।

उसने अपने आसपास देखा। सारी बर्फ शांत पड़ी थी। बस रमेशका बुरा हाल था। मंजिलके बहुत नजदीक आ जानेके बाद भी जीतकी खुशीका उसमें नामोनिशान तक न था। वह सोच रहा था अब क्या होगा। एक अध्यापकके रूपमें वह लोगोंका प्यारा और आदर्श बनना चाहता था। अब वह बम्बई लौटनेपर प्रिंसिपलको क्या जवाब देगा। लड़कोंके मां-बापको क्या मुंह दिखाएगा?

ऐसा सोचते सोचते वह बहुत दुखी हो उठा। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने सोचा, सवेरा होते ही पूरी पहाड़ी और पूरे रास्तेको छान डाला जाएगा। क्या पता वे दोनों कहीं बर्फीले रास्तोंके बीच फंस गए हों। इस तरहके निर्णयसे उसका मन कुछ हल्का हुआ और वह वहीं खेमेके बाहर एक बर्फकी चट्टानसे पीठ लगाकर अधलेटा हो गया।

उधर जब छोटे सैलानियोंकी यह टोली मोड़परसे गुजर रही थी, मोहिंदर और बलराम तब सबसे पीछे चल रहे थे। सहसा ही बलरामको थोड़ी दूर परे हटकर एक बर्फकी गुफा-सी दीखी। वह चुपकेसे मोहिंदरको साथ लेकर उसी तरफ चल दिया। गुफाके भीतर पहुंचकर उन दोनोंको बहुत भला लगा। बर्फके इस सफेद घरने उनका मन लुभा लिया। वे उस गुफामें आगे, और आगे बढ़ते गए। इसी तरह वे लगभग २५-३० गज आगे चले गए तभी एक जोरकी आवाज हुई।

उन्होंने पीछे फिरकर देखा: गुफाके दरवाजेपर बर्फकी एक शिला गिर पड़ी थी और उसने गुफामें अंधेरा कर दिया था। एक छोटा-सा भाग खुला था, लेकिन उसमेंसे बाहर नहीं निकला जा सकता था। दोनों लड़के अनुभव कर रहे थे कि रात घिरती जा रही है।

"अब क्या होगा?" बलरामने कहा।

"रात यहीं काटनी पड़ेगी और क्या?" मोहिंदरने नाराजगीसे कहा।

"ओह, इतनी सर्दीमें, बिना कम्बलके?"

"क्यों नहीं हम रास्ता बनानेकी कोशिश करें?" मोहिंदरने अपनी लकड़ीकी ओर इशारा करते हुए कहा।

बल्लूको भी यह बात ठीक जंची। दोनों उस

चट्टानको अपने
भेदने लगे। लेकिन
ठिठुर गए और वे
"मास्टर सोचे
शरारत की है," म
"और नहीं तो
बुरा।"
कुछ देर तक
तभी मोहिंदरने क
है, कुछ है क्या?"
"यहां तो बस
कहा और अपनी
कुछ चाकलेट हैं
सुभीता तो हो ज
बलरामने अप
ही थी कि-गुफाके
आंखें दिखाई दीं

चट्टानको अपने हाथोंकी नुकीली छड़ियोंसे भेदने लगे। लेकिन जल्दी ही उनके हाथ-पांव ठिठुर गए और वे पास ही एक कोनेमें बैठ गए।

"मास्टर सोचेंगे कि इन दोनोंने यहां भी शरारत की है," मोहिंदरने कहा।

"और नहीं तो क्या? बद अच्छा, बदनाम बुरा।"

कुछ देर तक दोनों चुपचाप सोचते रहे। तभी मोहिंदरने कहा—"बल्लू, बड़ी भूख लगी है, कुछ है क्या?"

"यहां तो बस बरफ ही बरफ है," बल्लूने कहा और अपनी जेबमें हाथ डाला। "अरे हां, कुछ चाकलेट हैं। कमसे कम मुंह चलानेका सुभीता तो हो जाएगा।"

बलरामने अपने हाथसे चाकलेट निकाली ही थीं कि गुफाके दरवाजेपर उन्हें दो चमकती आंखें दिखाई दीं।

दोनों सकपकाकर उधर देखने लगे। उस अंधेरेमें उन आंखोंके अलावा उन्हें और कुछ नहीं दिखलाई पड़ा।

बलरामने बुदबुदाते हुए कहा—"ये क्या हैं?" मोहिंदरने हिम्मत नहीं हारी थी। बोला, "पता नहीं, शायद हिम-मानव हो। हिमालयमें हिम-मानव होते हैं।"

उन्होंने देखा, वे आंखें पास आती जा रही हैं। "तो क्या इसने बर्फकी चट्टानको हटा दिया है?"

"हो सकता है," बलराम बोला।

अब गुफाके बाहर चांदनीका हल्का प्रकाश दिखाई देने लगा था।

बलराम और मोहिन्दर दोनों गुफाकी ओर दीवारसे लगकर गुफाके द्वारकी ओर बढ़ने लगे। जब वे हिम-मानवके नजदीक आए, तभी एक अजीब प्रकारकी आवाज करते हुए हिम-मानवने

(शेष पृष्ठ ७३ पर)

kissekahani.com

...ध कहानी

मूर्खों का नगर

-रेवादास

बात आजकी नहीं, बहुत पुरानी है। इंग्लैंडमें एक शहर था जिसका नाम था गोथम। ऐसा कहा जाता था कि गोथममें मूर्ख लोग रहते हैं। इसकी वजह भी थी।

एक दिन इंग्लैंडके राजाने गोथम नगरको देखनेकी इच्छा प्रकट की। यह खबर जब गोथम पहुंची, तो वहांके निवासी बहुत चिंतित हुए। उन दिनों किसी राजाका स्वागत-सत्कार करना कोई मामूली बात नहीं हुआ करती थी। आव-भगतमें अगर कहीं थोड़ी भी कमी या भूल हो जाती, तो लोगोंको भारी मुसीबतमें पड़ जाना पड़ता था। राजा नाराज हो जाते थे। इसका नतीजा होता था कैद या मौतकी सजा।

शहरके बुजुर्ग लोग मंत्रणा करनेके लिए इकठ्ठे हुए। राजा आ रहे हैं, अब क्या किया जाए? बड़े हैरान थे सब।

एक व्यक्ति बोला, "हमें कोई ऐसी तरकीब सोचनी चाहिए कि राजा यहां न आ सकें।"

"लेकिन किया क्या जाए? राजाने जब आना तय किया है तब वह आएंगे जरूर," एक बुजुर्गने कहा, "इसलिए एक काम करो—शहरमें आनेके जितने रास्ते हैं सबपर पेड़ काट काटकर डाल दो। रास्ते बंद हो जाएंगे, राजा नहीं आने पाएंगे और हम लोगोंकी मुसीबत भी टल जाएगी।"

"तरकीब तो बुरी नहीं है। लेकिन राजा अगर नाराज हो गए, तब क्या होगा?" एक दूसरे व्यक्तिने पूछा।

"उसका तब देखा जाएगा, अब तो जान बचाओ," उस बुजुर्गने कहा।

इसके बाद शहरके आम लोगोंको बुलाया गया। उन्हें सारी बातें समझादी गईं। तब सबने अपने बुजुर्गोंकी सलाहके मुताबिक कुल्हाड़ियां लेकर पेड़ काटने शुरू किए और उन्हें शहरके रास्तोंपर डालने लगे। जब शहरमें पहुंचनेके सब मार्ग बंद हो गए, तो सब बेफिक्र होकर अपने अपने घर लौट आए।

यथासमय राजा आए। उन्हें शहरके सब रास्ते बंद मिले। रास्तोंपर कटे पेड़ बिछे हुए थे। यह देखकर राजा बहुत क्रुद्ध हुए। अपने आदमियोंको उन्होंने रास्ता साफ करनेका हुक्म दिया। रास्ता साफ हो गया।

पर राजाने गोथममें प्रवेश नहीं किया। वहींसे वापस लौट गए। जाते वक्त गोथम वासियोंको कह गए, "मैं लंदन पहुंचते ही शेरिफको भेज रहा हूं। वह आकर तुम लोगों-को इस गुस्ताखीके लिए सजा देगा।"

राजाकी बात सुनकर गोथम निवासी बुरी तरह घबड़ाए। सब यही कहने-सोचने लगे—"अब हम हम क्या करें? क्या करें हम?"

एक मनचला बोला, "जैसा किया, वैसा पाया। अपनी करनीसे जब हमने राजाको नाराज ही कर दिया, तब उसका फल भी हमें भुगतना पड़ेगा।"

एक दूसरा आदमी बोला, "चलो, बुजुर्गों-के पास चला जाए। देखें, वे क्या कहते हैं।"

सब उनके पास पहुंचे। बोले, "सब सुना है न? अब क्या होगा?"

"हां सुना है। इतना डर क्यों रहे हो तुम लोग? डरनेकी कोई बात नहीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि हम स
के आनेपर हमें यह
हम मूर्ख हैं। क्यों, या

सब एक स्वरमें

फिर मंत्रणा-सर
हुआ। सब खुश थे।

शेरिफके आनेक
लग ही चुकी थी।
सार कामपर जुट ग

शेरिफ गोथममे

सबसे पहले उ
मैदानमें बहुतसे ल
कर रहे हैं।

शेरिफने पूछा,
सब?"

मनोहर बाल पुस्तकालय
पु०सं०.....
बिजनौर

"क्यों?"

"क्योंकि हम सब मूर्ख हैं। राजाके शेरिफके आनेपर हमें यह दिखाना पड़ेगा कि वाकई हम मूर्ख हैं। क्यों, यह नाटक कर सकोगे न?"

सब एक स्वरमें बोल उठे, "हां, कर सकेंगे।"

फिर मंत्रणा-सभा बैठी। कार्यक्रम निश्चित हुआ। सब खुश थे।

शेरिफके आनेकी खबर गोथमके लोगोंको लग ही चुकी थी। वे निश्चित कार्यक्रमके अनुसार कामपर जुट गए।

शेरिफ गोथममें आया।

सबसे पहले उसने आकर देखा कि एक मैदानमें बहुतसे लोग मिलकर दीवारें खड़ी कर रहे हैं।

शेरिफने पूछा, "यह क्या कर रहे हो तुम सब?"

वे बोले—"हुजूर, इस मैदानमें बहुत पक्षी हैं। पर उन्हें जब हम पकड़ने जाते हैं, तो वे उड़ जाते हैं। इसी लिए हम इस मैदानकी चारों ओर दीवारें चिन रहे हैं जिससे वे उड़कर भाग न सकें।"

"कितने मूर्ख हो तुम लोग!" शेरिफने कहा, "चाहे जितनी ऊंची दीवार क्यों न बनाओ, पक्षी तो उड़ ही जाएंगे!"

वे आश्चर्य दिखाकर बोले, "अच्छा! हमें नहीं पता था यह। आप तो बड़े बुद्धिमान व्यक्ति हैं।"

(शेष पृष्ठ ७३ पर)

गणित पहेलियों का जादूगर

इतवारका दिन था। बच्चे अपने खेलमें मस्त थे। तभी अंकल डाग्सन आते दिखाई दिए। बच्चोंने तालियां बजाईं और खुश हुए। वे अंकलको बहुत अच्छी तरह जानते थे। दुबले-पतले शरीरवाले अंकल चार्ल्स डाग्सन आक्स-फोर्डमें गणितके प्रोफेसर थे। उनके काले घुंघराले बाल, गहरी नीली आंखें, विचित्र-सी आवाज और चेहरेपर मुस्कान देखते ही बच्चोंको उन्हें पहचाननेमें देर नहीं लगती। उनकी पुस्तक 'एलिस इन द वंडरलैंड' उन बच्चोंने पढ़ी थी। बच्चोंमें वह कहानीकारके रूपमें प्रसिद्ध तो थे ही, पर गणित-में भी वह कमाल दिखाते थे। बच्चे उन्हें इतने प्रिय थे कि वह उन्हें गणितके अनेक रोचक खेल दिखाया करते थे। कभी कभी बच्चे उन विचित्र खेलोंको देखकर सोचते कि अंकल जरूर जादू जानते हैं। पर दरअसल वह जादू तो नहीं, पर हां, गणितका जादू अवश्य जानते थे।

उस दिन जैसे ही अंकल पहुंचे, उन्होंने उन बच्चोंसे पूछा, "तुम लोग जोड़ना जानते हो?"

"हां, अंकल," एक स्वरमें बच्चोंने कहा।

"लेकिन जोड़ लगानेसे पहले उसका उत्तर बता सकते हो?" यह सुनते ही बच्चोंमें सन्नाटा छा गया।

अंकल बोले, "भई, मैं तो जोड़का उत्तर पहले लगा लेता हूं, तब जोड़ लगाता हूं!"

"कैसे?" एक बच्चेने पूछा।

"देखो, अभी बताता हूं," कहकर अंकलने एक कागजका टुकड़ा लिया। उसपर कोई संख्या लिखी और वहां बैठी उस घरकी मालकिनको उसे देकर बोले, "लो मैंने उत्तर लिखकर इन्हें दे दिया। अब इस बोर्डपर मैं एक संख्या लिखता हूं।" कहकर उन्होंने लिखा १०६६। "अब इसके नीचे कोई भी बच्चा अपने मनकी संख्या उतनी ही बड़ी लिख दे।"

पास ही खड़े एक लड़केने उसके नीचे लिखा—३४७८। इसके नीचे अंकलने लिखा—६५२१। अब किसी और बच्चेसे लिखनेके लिए कहा, तो एक लड़कीने आकर लिखा—७१५०। इसके नीचे अंकल डाग्सनने लिखा—२८४९। अब इस जोड़नेके लिए एक अन्य लड़का आया। जब सब संख्याओंको जोड़ा गया, तो कुल संख्या आई—२१०६४। अब वहां बैठी घरकी मालकिनको दिए गए कागजसे उसे मिलाया गया, तो वही संख्या निकली। बच्चे यह देखकर हैरान रह गए। उन्होंने सोचा अंकल जरूर जादू जानते हैं, वरना जबकि अलग अलग बच्चोंने अलग अलग संख्या लिखी, तो भला वह कैसे जान सकते हैं! सब आश्चर्यसे आंखें फाड़ फाड़कर देखने लगे उन्हें। इसी लिए शायद वह काला लंबा टोप लगाते हैं, हाथोंमें गरम दस्ताने पहनते हैं। जादूके ही कारण भयानक सर्दी और बरसातमें भी उन्हें ओवरकोट पहननेकी जरूरत नहीं पड़ती। उनकी इन विचित्र बातोंको सोचनेसे मुखमुद्रा भी विचित्र हो रही थी। यह देखकर अंकल डाग्सन हंसने लगे। उन्होंने अब इस खेलका रहस्य खोलना ही ठीक समझा।

वह मुसकराकर बोले, "यह खेल कोई जादू-वादू नहीं है। बस गणितका खेल है। तुम कोई भी संख्या लिखकर छिपा सकते हो, बस इतना करो कि पहले उस संख्यामें २०,००० जोड़कर उसमेंसे २ घटा दो। जो बचे उसे लिखकर छिपा दो। अब तुम वही संख्या अलग कागजपर लिखो जिसमें बीस हजार जोड़ा था। फिर किसी मित्रसे उसके नीचे कोई संख्या उतनी ही बड़ी लिखनेके लिए कहो। अब उसके नीचे तुम फिर अपनी संख्या लिखो, लेकिन अपनी संख्या इस तरकीबसे लिखो कि मित्र द्वारा लिखी गई संख्याका जोड़ ९९९९ आए। उदाहरणके लिए मित्रने लिखा ३५६४ तो तुम लिखो ६४३५। इसके बाद दूसरे मित्रसे अपनी मनपसंद संख्या

लिखनेके लिए कहो। इस तरह लिखो कि जब इस तरह पांच सं किसीको जोड़नेके लिए जोड़ी हुई संख्या कागजमें छिपाया था

यह सुनकर बच्चे अंकलसे सचमुच ऐसा

कि बड़ों बड़ोंको भु से ही नहीं माने। बतानेके लिए कहा

अब अंकल डा वह १२३४५६७९ "तुम अपनी संख्या नहीं लिखते। अच्छ से कौनसी संख्या

चे अंकलने लिखा—६५२१। बच्चेसे लिखनेके लिए कहा, ाकर लिखा—७१५०। इसके ने लिखा—२८४९। अब इस अन्य लड़का आया। जब सब ाया, तो कुल संख्या आई— हां बैठी घरकी मालकिनको उसे मिलाया गया, तो वही ी यह देखकर हैरान रह गए। जरूर जादू जानते हैं, वरना बच्चोंने अलग अलग संख्या कैसे जान सकते हैं! सब ड़ फाड़कर देखने लगे पद वह काला लंबा टोप दस्ताने पहनते हैं। जादूके सर्दी और बरसातमें भी की जरूरत नहीं पड़ती। ोंको सोचनेसे मुखमुद्रा भी यह देखकर अंकल डाग्सन

खेलका रहस्य खोलना

, "यह खेल कोई जादू- का खेल है। तुम कोई सकते हो, बस इतना में २०,००० जोड़कर ी बचे उसे लिखकर संख्या अलग कागजपर ोड़ा था। फिर किसी ख्या उतनी ही बड़ी उसके नीचे तुम फिर ा अपनी संख्या इस द्वारा लिखी गई । उदाहरणके लिए म लिखो ६४३५। नी मनपसंद संख्या

लिखनेके लिए कहो। उसके नीचे भी अपनी संख्या इस तरह लिखो कि उसका जोड़ ९९९९ आए। जब इस तरह पांच संख्या हो जाएं, तो उन्हें किसीको जोड़नेके लिए दे दो। तुम देखोगे कि जोड़ी हुई संख्या वही है जिसे लिखकर तुमने कागजमें छिपाया था।"

यह सुनकर बच्चे बेहद खुश हुए। उन्होंने अंकलसे सचमुच ऐसा गणितका जादू सीखा था

कि बड़ों बड़ोंको भुलावेमें डाल दें। पर वे इतने-से ही नहीं माने। अंकलसे कोई और तरकीब बतानेके लिए कहा।

अब अंकल डाग्सनने एक लड़केसे कहा कि वह १२३४५६७९ लिखे। उन्होंने देखा तो बोले, "तुम अपनी संख्या बहुत अच्छी तरह बनाकर नहीं लिखते। अच्छा अब तुम्हीं बताओ कि इनमें-से कौनसी संख्या तुमने सबसे खराब बनाई है।

उस लड़केने ध्यानसे देखकर कहा—"मैंने पांच-की संख्या ठीकसे नहीं बनाई है।"

"अच्छा तो इस लाइनमें तुम ४५ का गुणा कर दो," अंकल ने कहा।

उस लड़केने १२३४५६७९ में ४५ का गुणा किया, तो उत्तर आया ५५५५५५५५५।

"देखा, इस तरह जब तुम कई बार उस संख्याको लिखोगे, तो वह सुंदर बनने लगगी।"

"लेकिन अंकल यह कैसे हो गया? मान लीजिए मैंने ४ कहा होता तब?" उस लड़केने पूछा।

"तब मैं तुम्हें ३६ से गुणा करनेके लिए कहता," अंकलने उत्तर दिया।

"पर यह कैसे होता है?" लड़केने पूछा।

"देखो, जो भी संख्या तुम खराब लिखते हो उसमें ९ का गुणा कर दो और जब यह संख्या आ जाए तो उससे १२३४५६७९ को गुणा कर दो। तुम देखोगे कि वह खराब बनने वाली संख्या ९ बार आ जाएगी।"

हरिकृष्ण देवसरे

बच्चे बहुत खुश हुए। और अब अंकल डाग्सनको कहीं जाना था, इसलिए वह सबको 'बाई बाई' करके चले गए। धीरे धीरे अंकल डाग्सन बच्चोंमें लेविस कैरोलके नामसे अधिक मशहूर हो गए, क्योंकि उनकी पुस्तक 'एलिस इन द वंडर-लैंड' इसी नामसे छपी थी।

लैविस कैरोलके अधिक मित्र न थे। बच्चे ही उनके मित्र थे। वैसे उस समयके रस्किन, टेनिसन और रोसेट्टी आदि प्रसिद्ध लेखकोंसे उनका अच्छा परिचय था। पर स्वभावतः लैविस कैरोल बच्चोंको ही अधिक प्यार करते थे। उनकी जेबोंमें हर समय गणितके खिलौने और पहेलियों-का सामान भरा रहता था। वह उनसे बच्चोंका मन बहलाते थे। उन्होंने गणितकी भी दो पुस्तकें लिखी थीं। एक थी—'क्यूरिसा मथमटिसा' और दूसरी थी— 'द फार्मूला ऑफ प्लेन ट्रिग्नामेट्री'। पर वह बच्चोंमें अपनी गणित पहेलियों और कहा-नियोंके लिए अधिक प्रसिद्ध हुए। ●

आकाशवाणी, भोपाल।

मिठाई के मजे

फोटो : दयासिंह

१– "इस मुन्नीकी बच्चीने बड़ी देर लगा दी! अब अकेले चाय क्या खाक पिऊं?"

२– "कहां मर गई थी... खोज खोजकर थक गया... चल, चाय पिएं।"

३– "नौकर भी बड़ा बदमाश है...नाश्ता तो लाया ही नहीं, अब बैठकर इंतजार करो।"

४– "चखकर तो देख, जायकेदार गुलाब-ज बने हैं आज!"

६– "तूने मुझे मिठाई मैंने तुझे मिठाई दोनोंके मुंह मीठे मी

: क्यासिह

की बच्चीने बड़ी
ती! अब अकेले
ाक पिऊं?"

ई थी...
ल गया...
"

दमाश
लाया
ठकर

४– "चखकर तो देख, क्या जायकेदार गुलाब-जामुन बने हैं आज!"

५– "क्या सब मुझे ही खिला दोगे? तुम भी तो खाकर देखो।"

६– "तूने मुझे मिठाई खिलाई, मैंने तुझे मिठाई खिलाई, दोनोंके मुंह मीठे मीठे! हैं न?"

kissekahani.com

जीने की कला - ११

सवा सेर का दिल

- अलकारानी जैन

जब तक किलोके बाट प्रचलित नहीं हुए थे, किसी बहादुर आदमीकी तारीफके लिए इस मुहावरेका प्रयोग होता था :

'उसका दिल सवा सेरका है!'

किसीका दिल सवा सेर या सवा किलोका कैसे हो सकता है? वास्तवमें दिलको मजबूत और वजनदार बनानेके लिए बचपनसे ही कुछ खास आदतें डालनी पड़ती हैं। अगर तुम चाहते हो कि बड़े होकर तुम्हारा दिल सवा किलोका कहलाए, तो इस कहानीपर ध्यान दो :

वेल्सका रहने वाला एक आदमी बड़ी कठिनाईसे धक्के खाता और दूसरोंको धकेलता रेलगाड़ीके एक डिब्बेमें चढ़नेमें कामयाब हो गया। गाड़ी स्वानसी स्टेशन-से रवाना होकर इंग्लैंड जाने वाली थी। भीतर पहुंचने पर उसने देखा कि एक नौजवान बड़े संतोषके साथ पैर फैलाए अपनी सीटपर बैठा था। वह भी वेल्सका ही रहने वाला था। उसने भी भारी धक्कामुक्की करके गाड़ीपर चढ़नेमें कामयाबी हासिल की थी।

जब दोनों इतमीनानसे बैठ गए, तो पहले आदमीने देखा कि चार-पांच अंग्रेज आपसमें थोड़ा भिचे हुए खड़े हैं। उनके पीछे कई सीटें यों ही खाली पड़ी थीं। उन्हें ताज्जुब हुआ।

इतनेमें गाड़ी चलनेके लिए हिली। खड़े हुए अंग्रेजों-मेंसे एक अपने आपको संभाल नहीं पाया। उसका पैर बैठे हुए दूसरे वेल्सवासीके पैरपर जा पड़ा। उसने विनतीके स्वरमें कहा : "क्षमा करें, बाबा!"

"आखिर ये लोग बैठ क्यों नहीं जाते?" बाबा शब्दसे चिढ़कर दूसरे वेल्सवासीने पहलेसे कहा, "सीटें तो बहुत खाली पड़ी हैं।"

"इसलिए कि ये अंग्रेज हैं, मजबूरीमें पहले दर्जेके डिब्बेमें चढ़ आए हैं, जब कि टिकट इनके पास तीसरे दर्जे-के हैं," पहलेने उत्तर दिया।

"लेकिन मेरे पास भी तो तीसरे दर्जेका ही टिकट है," पहलेने कहा।

"मालूम है," पहलेने फिर उत्तर दिया, "मेरे पास भी तीसरेका ही है।"

कहनेकी आवश्यकता नहीं कि उस डिब्बेमें टिकट चैकर नहीं था। जब जब हम किसी सार्वजनिक सेवाको ठगते हैं, हमेशा चैकर मौजूद नहीं होता। कई बार कई लोगोंका बिना टिकट, बिना चैक हुए ही सफर हो जाता है। विद्यार्थियोंका तो इस बारेमें—झूठ या सच— नाम ही बदनाम है।

छोटी छोटी प्रवंचनाएं

अनेक बार हम अपने मित्रोंको जाने-अनजाने धोखा देते हैं। किसीका पैन उड़ाकर अपनी शान बघारना, किसीको कोई पुस्तक देनेका वादा करके उसे भूल जाना, झूठ बोलकर छोटे-मोटे आग्रह या सजासे अपनी जान छुड़ाना, परीक्षाओंमें निरीक्षकोंको उल्लू बनाकर दूसरेकी कापीमें झांक लेना, उधार सामान लेकर उधरका रुख भी न करना—आदि आदि ऐसे ही नमूने हैं।

कितनी ही छोटी छोटी प्रवंचनाएं रोज रोजके जीवनमें हम करते हैं या कर बैठते हैं। बचपनके खिलंदड़ेपनमें ये उतनी गंभीरतासे शायद ली भी नहीं जातीं। इनके लिए जेल जाना नहीं पड़ता। लेकिन इनसे एक बड़ा नुकसान होता है, जो जेल जानेसे भी बदतर है।

इससे एक आदत बनती है। चरित्र शब्दको यदि हम बड़े मानोंमें लें, तो हमारे भावी चरित्रका स्वरूप

उस ने विनती के स्वर में कहा : "क्षमा करें, बाबा!"

पराग

इन आदतोंसे एक खास श
है। हम हर कठिनाईमेंसे निक
का रास्ता खोजनेके आदी
ऐसी सहूलियतपर कोई तग
है, तो हमारा दिल धक्से हो
पड़ती है। दिल कमजोर प
हमारे उस अनुचित कार्य
नैतिक बल नहीं होता।

दिल का अलार्म

छोटेसे छोटे किसी
हमारा दिल अंदरसे बोल
दिल बहुत कोमल तथा स
मीटरपर मौसमके परिवा
कार्डियोग्रामपर दिलकी
रेखामें लिखता चलता है
बारीकसे बारीक हरकत
करता रहता है। कोई भी
बाहर हुई कि उसने अल

हम जब दिलके अल
देते हैं, तो वह सुबह ही
घड़ीकी तरह दब कर ना
ही घड़घड़ करती रह
अलार्मकी ओरसे हमारे
दिलपर बराबर चोटें
और हल्का होता चलता

अपराधीको अपने
इस प्रक्रियाका पता नहीं
जानेपर सवा किलोका
होते चलते हैं। उसका
शेरका दिल चूहेके दि
आयु घटने लगती है।

इस तरहके दिल
सहन करनेमें समर्थ नहीं
पहलवान-सा दिखाई दे
शेर मिट्टीका ढेर बन क

स्वाधीन या पराधी

मैं जानती हूं तुम
की आवाज हमेशा ना
आक्रांत पिंड है। यह
समय भी फड़कता है
आलार्मोंको सुनते रहा
हम वंचित रह जाएंगे

तब एक और स
मेंदकी तरह गोल हो
होते हैं। प्रलोभनोंके
होता है। वह उस गति
अब तक लुढ़कनेसे मि

इन आदतोंसे एक खास शक्ल अख्तियार करता चलता है। हम हर कठिनाईमेंसे निकलनेके लिए बेजा सहूलियत-का रास्ता खोजनेके आदी हो जाते हैं। जब किसी ऐसी सहूलियतपर कोई तगड़ा पहरेदार बैठा मिल जाता है, तो हमारा दिल धक्से हो जाता है। एक चोट दिलपर पड़ती है। दिल कमजोर पड़ जाता है, क्योंकि उसके पास हमारे उस अनुचित कार्यके परिणामको झेलनेके लिए नैतिक बल नहीं होता।

दिल का अलार्म

छोटेसे छोटे किसी भी अपराधको करते समय हमारा दिल अंदरसे बोल देता है कि यह ठीक नहीं। दिल बहुत कोमल तथा सजीव यंत्र है। जिस प्रकार बैरो-मीटरपर मौसमके परिवर्तनका तुरंत प्रभाव पड़ता है, कार्डियोग्रामपर दिलकी धक्-धक् का चित्र ऊंची-नीची रेखामें खिंचता चलता है, उसी प्रकार दिल दिमागकी बारीकसे बारीक हरकतोंको अपनी नोटबुकमें नोट करता रहता है। कोई भी हरकत ग्राफकी निश्चित रेखासे बाहर हुई कि उसने अलार्म बजाया।

हम जब दिलके अलार्मकी घंटी उसके बजते ही दबा देते हैं, तो वह सुबह ही सुबह उठा देने वाली अलार्म घड़ीकी तरह दब कर नहीं रह जाती। वह दिलके भीतर ही घुड़घुड़ करती रह जाती है। धीरे धीरे दिलके इस अलार्मकी ओरसे हमारे कान बहरे हो जाते हैं। लेकिन दिलपर बराबर चोटें पड़ती रहती हैं। वह कमजोर और हल्का होता चलता है।

अपराधीको अपने ही दिलके भीतर चलने वाली इस प्रक्रियाका पता नहीं रहता। लेकिन जो दिल वक्त आनेपर सवा किलोका होता, उसमेंसे मिलीग्राम कम होते चलते हैं। उसका पता सिर्फ तभी चलता है जब शेरका दिल चूहेके दिलमें बदल जाता है। मनुष्यकी आयु घटने लगती है।

इस तरहके दिल किसी बड़े शॉक या झटकेको सहन करनेमें समर्थ नहीं होते। किसी ऐसे ही बड़े झटकेमें पहलवान-सा दिखाई देने वाला आदमी, कूदता-फांदता शेर मिट्टीका ढेर बन कर रह जाता है।

स्वाधीन या पराधीन

मैं जानती हूं तुम क्या सोच रहे होगे। यही कि दिल-की आवाज हमेशा नहीं सुनी जा सकती। दिल भयसे आक्रांत पिंड है। यह किसी साहसिक कार्यको करते समय भी फड़कता है और दुस्साहसके समय भी। इसके आलार्मोंको सुनते रहा जाए, तो अनेक आमोद-प्रमोदोंसे हम वंचित रह जाएंगे।

तब एक और सच्चाई हम बता दें। आदमीकी आदतें गेंदकी तरह गोल होती हैं। प्रलोभन सदा लुढ़काऊ होते हैं। प्रलोभनोंके प्रति खिंचने वाला दिल पराधीन होता है। वह उस गति व प्रवेगके अधीन होता है, जो उसे अब तक लुढ़कनेसे मिल चुकी होती है।

अनेक बार वह पछताते हैं

क्या हममेंसे कोई चाहता है कि हम स्वाधीन न हों? पराधीनतामें भी आमोद-प्रमोद मिलते हैं। किसीके लिए वे जहरके समान होते हैं, किसीके लिए अमृत। यह इस बातपर निर्भर करता है कि वह जहर 'तुम्हें' कितना मीठा लगता है। यह दिलकी गेंद जितनी लुढ़कती है उतनी ही घिसती है, उतनी ही हल्की होती जाती है। उसमें कभी सवा सेर वजन नहीं होने पाता।

थाली का बैंगन

क्या तुमने कभी किसीके बारेमें यह कहे जाते सुना है—'अरे, उसका क्या विश्वास? वह तो थालीका बैंगन है। यों ही इधरसे उधर, उधरसे इधर लुढ़कता रहता है।'

जिन लोगोंने किसी भी काममें सफलता पाई है और बड़े आदमी बने हैं, उन्होंने ऐसे कठिनाईके क्षण कभी न कभी अवश्य भुगते हैं, जिनमें चरित्र-बलकी परीक्षा होती है। ये कठिनाइयां ही वे तुलाएं हैं, जिनपर दिलोंके वजन तौले जाते हैं।

मैं अपने एक ऐसे चाचाको जानती हूं, जो मेहनत करनेमें किसीसे पीछे नहीं हैं। जब कामपर मंडते हैं, तो बैलकी तरह मंडते हैं। लेकिन अपमान, गरीबी, दुर्भाग्य, इन सबके साथ उनका चोली-दामनका साथ है। उनमें एक ही ऐब है। उनकी जेबमें अगर पैसा आ जाए, तो वह तेजीसे उनकी जरूरतों पर खर्च हो जाता है। इन जरूरतोंमें ज्यादातर फौरी (तात्कालिक) होती हैं। फिर वह पैसा चाहे उनका अपना हो या अमानतका—पहले उनके काम आएगा, फिर बचा-खुचा किसी औरके। लेकिन अक्सर वह बचता ही नहीं। उनका कहीं विश्वास नहीं होता, कहीं ज्यादा दिन बैठने-उठनेका ठिकाना नहीं रहता। कोई दोस्ती ज्यादा दिन टिकी नहीं रहती।

यह बात नहीं कि वह अपनी कमीको समझ नहीं पाते। अनेक बार वह पछताते हैं, मित्रोंसे माफी मांगते हैं, दौड़

(शेष पृष्ठ ७५ पर)

छोटू और लंबू
इस वर्ष स्वाधीनता दिवस पर हमें देश के लिए कोई अच्छा काम करने की प्रतिज्ञा करनी है!
मेरे विचार से हमें देश के सूखा-ग्रस्त-इलाकों की सहायता के कार्य में हाथ बटाना चाहिए!
ठीक है!
अच्छा तो, सज्जनो, आज से हम प्रतिज्ञा करते हैं कि नाश्ते के अलावा दिन में केवल एक ही बार भोजन करेंगे और एक समय का भोजन बचाकर सूखा-ग्रस्त-इलाकों को भेजेंगे!
ठीक है, ठीक है! हम ऐसा ही करेंगे!
छोटू-लंबू,
जिंदाबाद!
उसी दिन शाम को...
छोटू, हम शाम का भोजन कल करेंगे। आज का बना भोजन जाली की अलमारी में रखे देता हूं ताकि कल तक खराब न हो!
ठीक है,
दूसरे दिन सुबह...
मेरे से खाना गायब
और फिर...
रात में...
ओह! चोर आ रहे फौरन जाल फेंकना चाहिए!

स [१७५२]

बारिशकी एक दोपहरकी बात है। दो आदमी मकान-की छतपर खड़े हुए आपसमें कुछ बातचीत कर रहे थे। उन[illegible] हाथमें एक पतंग थी। परंतु पतंग कागजकी बनी हुई [illegible] होकर रेशमी कपड़ेकी बनी हुई थी।

धीरे धीरे आकाशमें बिजली चमकने लगी और बार[illegible] कोंकी गड़गड़ाहटका शोर बढ़ता गया। तब उनमेंसे का[illegible] उम्रवाले युवकने पतंगको उड़ाना आरंभ किया।

"देखो हमारी इस नई पतंगका विवरण तुम किसीको न [illegible]ताना। न ही यह बताना कि हम कोई नवीन प्रयोग क[illegible] जा रहे हैं," उसके साथवाले युवकसे कहा।

"जैसा आप कहेंगे मैं वैसा ही करूंगा," पतंग उड़ाने वाले युवकने कहा।

उनकी डोरके रोएं तनकर खड़े हो चुके थे। परंतु उन्हें इस कार्यमें कोई सफलता अभी तक नहीं मिली थी। धीरे धीरे बारिश होने लगी। उनकी पतंग पानीमें भीगने लगी। उनमेंसे बड़ा युवक छतके किनारेपर बैठकर कुछ सो[illegible]ने लगा। अचानक एक झटकेके साथ वह उठा और मु[illegible]कराते हुए पतंग उड़ाने वाले युवकके पास गया और क[illegible]ने लगा, "तुम जाकर एक चाबी और एक लोहेकी

छोटी-सी छड़ ले आओ।"

"परंतु चाबी और लोहेकी छड़ीका आप क्या करेंगे?" पतंग उड़ाने वाले युवकने पूछा।

"संभव है चाबी और लोहेकी छड़से हमारे इस प्रयोगमें कुछ सफलता मिले।" इतना कहकर उस युवकने अपने साथीसे पतंग ले ली और उसे नीचे भेज दिया।

ये बेंजामिन फ्रेंकलिन और उनका बेटा विलियम थे।

कुछ समयके पश्चात विलियम एक चाबी और लोहेकी छोटी-सी छड़ लेकर आ गया। विलियमने बेंजामिन फ्रेंकलिनसे पतंग ले ली तथा चाबी और छड़ उन्हें देते हुए कहा, "देखिए, पिताजी, डोर पानीमें भीग गई है, परंतु इसके रोएं आपसमें जुड़े नहीं हैं। ऐसे अकड़े खड़े हैं जैसे उन्हें गर्मी मिल रही हो।"

"विलियम, तुम्हारी बात ठीक है। परंतु इसका निर्णय करनेके लिए अभी कई प्रयोग करने पड़ेंगे।" इतना कहकर वह चाबीको पतंगकी डोरके साथ बांधने लगे।

बारिश तेज होती जा रही थी। वह दोनों भी अब बिल्कुल भीग चुके थे। धीरे धीरे चाबी भी भीग गई। अचानक बेंजामिनने इस चाबीको लोहेकी छड़से छू दिया। 'अरे यह क्या?'—अचानक बेंजामिन फ्रेंकलिनके मुंहसे निकला। बेंजामिन फ्रेंकलिनने विलियमको बताया, "लोहे-की चाबीको यदि लोहेकी छड़से छुआ जाए, तो एक झटका-सा लगता है। इसका अर्थ यह है कि बादलोंमें चमकने वाली वस्तु बिजली ही है।"

"पिताजी यदि आप पतंग पकड़ें, तो मैं भी चाबीको छूकर देखूं," विलियमने उत्सुकतासे कहा।

"हां हां, क्यों नहीं!" इतना कहकर बेंजामिन फ्रेंकलिनने विलियमके हाथसे पतंग ले ली और उसे स्वयं उड़ाने लगा।

विलियमने लोहेकी छड़ ली और चाबीको छू दिया। उसे एक जोरका झटका लगा और वह गिरते गिरते बचा। यह देखकर बेंजामिन फ्रेंकलिनने कहा, "विलियम, हमारा आजका प्रयोग सफल हो गया।" इतना कहकर उन्होंने पतंगको उतारना आरंभ कर दिया। चाबी अब काफी भीग चुकी थी। साथमें लोहेकी छड़ भी भीग चुकी थी। इस कारण अब चाबीको लोहेकी छड़से छूनेपर चाबीमेंसे चिंगारियां निकलने लगी थीं।

बच्चो, तुमने बड़ी बड़ी इमारतोंकी छतपर एक लोहेकी छड़ लगी हुई देखी होगी। उस छड़का एक सिरा छतसे ऊपर और दूसरा सिरा धरतीमें गड़ा होता है, जिससे यदि उस इमारतपर बिजली गिरे तो वह उस छड़के द्वारा धरतीमें चली जाए और इमारतको कोई हानि न पहुंचे।

बेंजामिन फ्रेंकलिनने भी अपने घरमें एक ऐसी ही

बिजली के आविष्कारक

लोहेकी छड़ लगाई थी। परंतु उस छड़के नीचेके सिरेको वह धरतीमें गाड़नेके बजाए अपनी प्रयोगशालामें ले गए। उसके साथ उन्होंने दो घंटियां बांध दीं। जब आस-मानमें बादल छा जाते थे, तब वह घंटियां अपने आप बजने लगती थीं।

एक दिन रातको बारिश बहुत जोरोंसे हुई। बिजली भी बहुत तेजीसे चमकी। बस फिर क्या था, घंटियां अपने आप बजने लगीं। परंतु इसके साथ ही उन घंटियोंमें-से चिंगारियां भी निकलने लगी थीं। चिंगारियोंके कारण सारे कमरेमें प्रकाश फैल गया था, जिसे देखकर बेंजामिन फ्रेंकलिन सोचने लगे कि क्या कभी ऐसा प्रकाश सभी घरोंमें भी हो सकेगा?

अब बेंजामिन फ्रेंकलिन इस संसारमें नहीं हैं। सन् १७९० में वह इस संसारसे विदा हो गए थे। परंतु उनकी इच्छा पूरी हो चुकी है और अब सारे संसारके घरोंमें बिजलीका प्रकाश जगमगाता है।

—श्रवणकुमार

राजपाल एंड संज, पो. बा. १०६४, दिल्ली—६

वाल्ट डिस

अद

जग

सच्ची

चींटियो

kissekahani.com

चोर पकड़ो

धारावाहिक उपन्यास
[illegible]

अब तक तुमने पढ़ा था :

गिरीश एक होनहार लड़का था लेकिन चाट-पकौड़ीकी लत और घूमने-फिरने के शौकने उसे कहींका न छोड़ा। मौका हाथ आते ही वह अपने पिताके रुपये उड़ाकर बम्बई जा पहुंचा, जहां उसकी मौसी रहती थी और लड़कोंको उड़ाने वाले एक दलके सरदार केहरके हाथ पड़ गया।

केहरने अपनी योजनाके अनुसार उस सुंदर लड़केको उड़ाए हुए बालकोंसे भीख मंगवाने वाले एक दलके सरदारके हाथों बेच दिया। वहां गिरीशको कुछ समय पहले पकड़कर लाए गए दो अन्य बच्चे मिले। तीनोंमें जल्दी ही दोस्ती हो गई और अंतमें उनके साथ आ मिला एक अन्य लंगड़ा लड़का, जो पुलिसके नाम गिरीशका एक खत लैटर-बाक्समें डालनेको राजी हो गया।

लो, अब आगे पढ़ो :

(५)

गिरीशने गोपालको इस बातका लालच देकर मिला लिया कि वह बाहर निकल जानेपर उसके लिए कोई अच्छा इंतजाम कर देगा। गोपालके साथ जाकर गिरीश चुपकेसे वह रास्ता भी देख आया जिससे सब भिखारी बाहर जाते और अंदर आते थे।

गिरीशने बहुत सोच-समझकर कोठरी नंबर १ और २ की कुंडियां खोल दीं। गोपालसे कहा कि कहींसे एक पेंसिल ला दे। गोपाल एक बार फिर बाहर

गया और कहींसे एक पेंसिल
बैठकर कागजपर एक पत्र
बच्चे भिखारियोंके सरदा
आपने हमें जल्दी नहीं बच
होगा। —गिरीश।"
लिफाफेपर पता लिख
गोपाल वह पत्र भी
लिफाफेपर टिकट नहीं ल
शाम होते ही वह जग
गुल था। मोहनने देखा को
किताब करने वाले लोग वह
उनपर चौकसी रखने वाले
गोपालने दिखाया था।
बताई। इस समय गनपत
आते ही पहले डरते डरते
बैठे हैं, तो कोठरीका दरवा
सरिताने दरवाजेपर
लोगोंको सुना रहा था कि
बच्चोंने उसे मारा। उसे
नहीं हुई। वह चोर दर

खोदके गाड़ दूंगा।"

गिरीशने फुसफुसाकर कहा, "बेचारा हमारी खातिर मार खा रहा है। किसीने देख लिया होगा और चुगली खाई है।"

सरिता भी रो पड़ी—"सच, गिरीश भैया, ये कितने खराब लोग हैं, क्या भगवान हमारी नहीं सुनेगा?"

गिरीशने सरिताको दिलासा दिया—"हमें कोई तरकीब करनी ही होगी। अच्छा मोहन, रातको कितने लोग रहते हैं यहां?"

"कल रात तो सिर्फ गनपत था। बाकी सब भिखारी सोए थे। वे लोग दिन भरमें थक जाते हैं, इसलिए गहरी नींद सोते हैं।"

"आज शायद रहमत भी रहेगा।"

"हां, उसे काम जो सौंपा गया है।"

गिरीशने मुट्ठी तानकर कहा, "कोई बात नहीं मोहन, हम एक तरकीब करेंगे। रहमत जब मुझे लेने आएगा, तब मैं लेटा रहूंगा। तुम दरवाजा खोलना। जैसे ही वह अंदर घुसे, झटसे दरवाजा बंद कर लेना। बस, जैसे भी हो, गनपतको नहीं आने देना। रहमतकी टांगोंमें सरिता लिपट जाए। उसके बाद दरवाजा बंद कर तुम भी लिपट जाना। मैं लेटा रहूंगा। जैसे ही रहमत गिर पड़ेगा तब उठूंगा।"

सरिताने पूछा, "इससे क्या होगा?"

"देखती जाओ," गिरीशने पक्केपनसे कहा।

गिरीशने मोहनके तकिएमेंसे नोट निकालकर जेबमें भर लिये। वह चढ़कर रिवाल्वर उतारने ही जा रहा था तभी दरवाजा खटका। तीनों सहम गए। रहमतकी आवाज आई: "छोकरो, खाना लाया हूं, खोलो।"

तीनोंको धीरज बंधा। रहमत अकेला नहीं आया था। गनपत भी साथ था, वह दरवाजेपर ही खड़ा था। सच्ची बात तो यह थी कि दिनकी घटनासे अकेले आनेकी किसीकी हिम्मत नहीं थी। रहमतने खाना रखा। उसने घूमकर चारों तरफ निगाह डाली। फिर कहा, "बड़े छोकड़ेका नहीं है," फिर तुरंत वापस लौट गया।

खाना देखे लायक भी कम था। लेकिन तीनोंने मिलकर खाया।

गिरीशने रिवाल्वर भी उतार लिया। जेबमें रख लिया। तीनों बैठकर बातें करते रहे। मोहन बोला, "भैया, मैं और सरिता तो रो रोकर ही मर जाते। तुम आए तो हिम्मत बंधी।"

सरिताने कहा, "मैं जबसे आई हूं मोहन भैयासे बोली ही नहीं। रोती रही और सोती रही।"

"अब हम तीनों पक्के मित्र हैं। मजा तब है जब अपना काम बन जाए," गिरीशके मनमें निकल जानेकी धुन थी।

मोहन बोला, "एक एक ग्यारह होते हैं; यहां तीन एक हैं इसलिए एक सौ ग्यारह हैं। हम लोग हारेंगे नहीं।"

दरवाजा फिर खटका। गिरीश चटपट रिवाल्वर हाथमें लेकर आ लेटा। सरिता दरवाजेके एक तरफ खड़ी हो गई। मोहन दरवाजा खोलकर एक तरफ खड़ा हो गया। रहमत टार्च हाथमें लिए कोठरीमें घुसा। मोहनने झटसे दरवाजा बंद कर कुंडी लगा दी। गनपत बाहर तैनात खड़ा था, लेकिन मोहनने फुर्तीसे काम लिया और गनपत टापता रह गया। सरिताने एक छलांग भरी और घबड़ाकर पीछे मुड़ते रहमतकी टांगोंमें जा लिपटी। मोहन भी आ पहुंचा। दोनों इस बुरी तरह लिपट गए थे कि रहमत गिरते गिरतेकी हो रहा था और हाथसे दोनों बच्चोंपर मुक्के चलाता जा रहा था और मुंहसे गनपतको पुकार रहा था।

मोहन और सरिता मुक्के खाकर भी खड़े थे। सरिताने एक काम और शुरू किया। हाथोंके जोड़के स्थानपर गुदगुदाना शुरू कर दिया। रहमत गुदगुदीसे हार गया। वह लड़खड़ाकर गिरा। सरिताने टार्च लपककर अपने हाथमें ले ली। गिरीश उठ बैठा। उसने अपने हाथमें रिवाल्वर तान रखा था। बोला, "कुछ भी किया, तो

हमारी पसंद
प्रतियोगिता नं. ५ का परिणाम

'हमारी पसंद नं. ५' प्रतियोगिताके अंतर्गत 'पराग' के मई अंकमें प्रकाशित कहानियोंके बारेमें हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंदके विचारसे कौन-कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। खुशीकी बात है कि इस बार छह बच्चोंके हल सर्वशुद्ध आए, जिनके नाम और पते इस प्रकार हैं:

- **अशोककुमार मालानी, द्वारा नेतराम बनारसीलालजी मालानी, पो. पयागपुर, जिला बहराइच (उ. प्र.)।**
- **अनिलकिशोर जैन, ए ३।८.७ त्रिलोचन घाट, वाराणसी (उ. प्र)।**
- **संतोषकुमार निगम, द्वारा श्री जे. पी. निगम, शाह मेडिकल हालके पास, इतवारा, भोपाल (म. प्र.)।**
- **लक्ष्मीनिवास प्रसाद, द्वारा अग्रवाल हार्डवेयर स्टोर, पो. तालचेर, जिला ढेंकानाल (उड़ीसा)।**
- **पवनकुमार अग्रवाला, सुंदर ड्रेसेस, पो. तालचेर, जिला ढेंकानाल (उड़ीसा)।**
- **मधु जौहरी, द्वारा श्री अमरनाथ जौहरी, २१ नई बस्ती, खुरजा (उ. प्र)।**

सही हल वाली कहानियोंका क्रम इस प्रकार है:

१—रेल यात्रामें
२—जंगलकी राजकुमारी
३—वक्तकी बात
४—अठन्नी
५—मामाके घर जाएंगे

गोली मार दूंगा। और च
समझे? सिर्फ आवाज
यहां आओ। ज्यादा
आरपार होगी।" रहम
गिरीशके कहे अनुसार
न दरवाजा खोला।

गनपतपर भी रि
बोला, "अब सेरियत इ
है मंजूर या चलाऊं गो

दोनोंने मुंह लटक

गिरीशने संकेतसे
जानेको कहा और फि
आकर कुंडी लगा ली।

गिरीशको पसीन
पोंछते हुए बोला, "श
काम किया। आओ च

सरिता टार्च हा
देखकर कहा, "यह
लोगोंको अंधेरेमें ठोक

मोहन बोला, "

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए !

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओंको दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।

बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिये ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताजा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी ये सभी लाभ मिलेंगे ... एक डिब्बा महीनों तक चलता है।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

DC.O.35.H.

मम्मी, पकौड़ियां तो
भूगोल के अध्यापक भी
बना लेते हैं। ए
उन्हों ने हमें कांगों
की विशेषताएं बता

व्यंग्यकार : मन्

कोठरीसे जो रास्ता जा
गिरीशने कोठरी
गए। उन्हें यह देख ताज्ज
नहीं पड़ रहा है। तीनों
गया है। कहां है, यह
ज्यादा परेशान नहीं
बंद करके देखा, तो बाये
की न होकर लकड़ीकी
मारा। आवाज़ पोली
दीवार खोखली है। इसे
सबने एक मिनिट
उसके बाद मोहन और
खींचा जैसे मेजकी द
खिसक गया। उसके पी
और बढ़कर देखनेसे
ऊपरको और दायीं
सीढ़ियां बहुत संकरी थी
सोचा—नीचे उतरा
ऊपरवाली सीढ़ीपर
भी चढ़ने लगे।
करीब २० पैड़ी

तीन-चार दिनसे दादाजी देख रहे थे कि राजू, मन्नू और पिंकी खेलनेके समय भी कमरेमें बैठे घंटों बातें करते रहते हैं। परीक्षाएं अभी कुछ ऐसी समीप न थीं, सो यह तो निश्चित था था कि वे कोई बड़ी योजना बना रहे हैं। लेकिन कैसी योजना? जब तक दादाजी यह पता न लगा लें, उनका भोजन हज़्म होना बंद हो गया।

कई दिन तक दादाजीने बच्चोंकी एक एक

कहानी

लालच

– अवतारसिंह

kissekahani.com

क्रियापर ध्यान रखा कि वे कब सोते हैं, कब खाते हैं, कब पढ़ते हैं, कब गप्पें मारते हैं! पर कोई ऐसा सूत्र उनके हाथ न लगा, जिससे वे योजना की जड़ तक पहुंच पाते।

कई बार दादाजी अचानक उनके कमरेमें जा घुसे, पर तीनों तुरंत अपनी बातका विषय यों बदल देते जैसे रेलगाड़ी पटरी बदलती है। एक दिन ज्यों ही दादाजी कमरेमें घुसे, कुछ कहता हुआ मुन्नू रुक गया और राजूसे कहने लगा– "भैया, मिश्रित ब्याजके सवाल करवा दो न, साधारण ब्याजके तो मैं अपने आप कर लूंगा।"

राजूने भी तपाकसे जवाब दिया, "सवाल निकालनेसे पहले तुम्हें मिश्रित ब्याज और साधारण ब्याजका अंतर समझना चाहिए। कुछ लालची महाजन . . . . . "

पर दादाजीकी आंखें देख चुकी थीं कि मन्नूके सामने समाजिक ज्ञानकी पुस्तक पड़ी है और वह भी बंद! एकदम उनपर बरस पड़े, "मेरी आंखोंमें धूल झोंकते हो! न स्लेट न पेंसिल, किताब समाजिक ज्ञानकी और सवाल पूछते हो मिश्रित ब्याजका?"

राजू और मुन्नू कांप गए। बस्ते भी पासवाले कमरेमें पड़े थे। पर ऐन मौकेपर पिंकीने बात संभाल ली; बोली, "दादाजी, कमाल हो गया! आपको पता नहीं? मिश्रित ब्याजके प्रश्न तो राजू भैया चुटकी बजाते जबानी निकाल लेते हैं।"

मिश्रित ब्याज
स्वयं नहीं पता था,
रह गए।
साम-दाम-दंड-
चलता न दीखा, त
लगानेके लिए एक
एक दिन रो
शामके समय अपने
दादाजी दरवाजेसे
"अब हमारी
फरवरी कब आए
"अरे, आग
भूल ही गए!" यह
"लिस्ट इधर
स्कूलमें तो छुट्
मुन्नू धीरसे बोला
"स्कूल बंद
देंगे!" पिंकीने
दादाजी इत
बच्च भोजनके लि
धड़ाकेसे अंदर घु

बदलती है। एक
घुसे, कुछ कहता
सें कहने लगा—
ल करवा दो न,
प कर लूंगा।"
ब दिया, "सवाल
याज और साधा-
हुए। कुछ लालची

चुकी थीं कि
पुस्तक पढ़ी है
पर बरस पड़े,
स्लेट न पेंसिल,
सवाल पूछते हो

बस्ते भी पास-
मौकेपर पिंकीने
जी, कमाल हो
मिश्रित ब्याजके
जबानी निकाल

पराग

मिश्रित ब्याज क्या बला है, दादाजीको स्वयं नहीं पता था, सो वह दांत किटकिटा कर रह गए।

साम-दाम-दंड-भेद जब किसीसे भी काम चलता न दीखा, तो दादाजीने योजनाका पता लगानेके लिए एक नया तरीका अपनाया।

एक दिन रोजकी तरह जब तीनों बच्चे शामके समय अपने कमरेमें बैठे बातें कर रहे थे, दादाजी दरवाजेसे कान लगाकर खड़े हो गए।

"अब हमारी तैयारी तो पूरी है। जाने पंद्रह फरवरी कब आएगी?" राजू बोल रहा था।

"अरे, आग जलानेके लिए दियासलाई तो भूल ही गए!" यह पिंकी थी।

"लिस्ट इधर दिखाओ। और उस दिन स्कूलमें तो छुट्टी हो ही जाएगी।" राजू या मुन्नू धीरसे बोला।

"स्कूल बंद नहीं करेंगे, तो हम शोर मचा देंगे!" पिंकीने कहा।

दादाजी इतनेसे ही सब समझ गए। उधर बच्चे भोजनके लिए बाहर निकले, इधर दादाजी धड़ाकेसे अंदर घुस गए। एक जासूसकी तरह उन्होंने कमरेकी जांच-पड़ताल शुरू कर दी। काफी खोजके पश्चात आखिर उन्हें अपने संदेह-का प्रमाण मिल ही गया। लोहेकी अलमारीके पीछे गत्तेके बड़े कार्ड-बोर्ड पर लाल स्याहीसे बड़ा बड़ा लिखा हुआ था—'हमारी मांगे पूरी करो!'

हुं, तो बच्चे स्कूलमें हड़ताल करानेकी सोच रहे हैं। मांगोंकी लिस्टें तैयार होती हैं। स्कूलमें आग लगा देने तककी योजना है। दादाजीको लगा कि अचानक ही उनके हाथमें वह शस्त्र आ गया है जिससे वह बच्चोंके हाथों हुई अपनी सभी पराजयोंका पूरा बदला ले सकते हैं।

रात भर दादाजी सोचते रहे कि इस ब्रह्मास्त्र-को किस दिशासे फेंके कि तीनों बच्चे उसकी लपेटमें आ जाएं। आखिर किसी तरह भोर हुई।

डैडीने रसोईमें दूधकी बोतलें लाकर रखीं कि दादाजी आंधी-तूफानकी तरह वहां आ धमके और बोले, "रामलाल, मुझे तुमसे एक बात कहनी है। एक मिनिट यहीं रहो। बाहर बच्चे हैं।"

डैडी आश्चर्यसे दादाजीको देखने लगे। नाश्ता तैयार करती मम्मीने भी अपने कान खड़े

कर लिये। दादाजीने पूरी बात सुनाते हुए कहा, "देख लो, कलको तुम्हारे लाड़ले स्कूलमें आग लगाते हुए पकड़े जाएं, तो मत कहना कि मैंने चेताया नहीं।"

उन दिनों छात्र-आंदोलनोंकी पूरे देशमें बाढ़-सी आ रही थी, इसलिए डैडीको एकदम चिंता हो गई। उस दिन दादाजी देर तक पार्कमें घूमते रहे। नौ बजे जब वह लौटे, तो बच्चे स्कूल और डैडी दफ्तर जा चुके थे। अपने शस्त्रका प्रभाव जाननेके लिए दादाजीने मम्मीसे पूछा, "क्यों, बहूरानी, रामलालने क्या तय किया?"

दादाजीको नाश्ता देते हुए मम्मीने उत्तर दिया, "जी, वह तो कह गए हैं कि आज शामको खानेकी मेजपर बच्चोंकी खबर लूंगा।"

दादाजी संतुष्ट हो गए।

बड़ी कठिनाईके बाद आठ बजे। आखिर बच्चे, मम्मी, डैडी और दादाजी सब खानेकी मेजपर बैठ गए। खाना खत्म होनेको आया, तो दादाजी परेशान हो गए। आंखसे उन्होंने डैडीको इशारा किया, पर डैडी कुछ सोचनेमें मग्न थे। आखिर डैडी बोले, "क्यों, राजू, तुम्हें पता है, जब हम पढ़ते थे, तो क्या पहनते थे?"

"क्या, डैडी?"

"धोती! कालेज हमने पाजामेमें गुजार दिया। पेंटकी शक्ल तो दफ्तरमें लगनेके बाद देखी। एक बारकी बात सुनाऊं। हमारे स्कूलमें इंस्पेक्टर साहब आने वाले थे। हैड मास्टरने हुक्म दिया कि सब लड़के पाजामे पहनकर आएं। पाजामा मेरे पास था नहीं। तुम्हारे दादाजी सिलवाते न थे। मैंने धोतीको दोनों टांगोंपर इस तरह लपेट लिया कि वह पाजामा लगने लगी। इंस्पेक्टरने मुझसे कोई सवाल पूछा। खड़े होते ही गांठ खुल गई और मेरा पाजामा बन गया धोती। सब हंसने लगे। बादमें हैड मास्टर साहबने वह मार लगाई कि अब तक याद है।"

"हाय! दादाजीने आपको एक पाजामा तक नहीं सिलवाया!" पिकीने ठंडी सांस भरी। दादाजीने खा जाने वाली नजरोंसे डैडीको देखा।

डैडी कुछ देर बाद फिर बोले, "कापियोंके नामपर तुम्हारे दादा हमें पंचायतके भद्दे कागज ला देते थे, जिन्हें हम सी लेते थे। जेब-खर्च हमें तीन दिनमें एक पैसा मिलता था, उसका भी हिसाब देना पड़ता था।"

"ओह! आपपर तो बड़े अत्याचार हुए!" मुन्नूने डैडीके साथ सहानुभूति दिखाई।

"एक दिन क्या हुआ, मैं स्कूलसे लौटा, तो मांने बीस सेर गेहूं सिरपर लादकर एक मील दूर कस्बेमें पिसाने भेज दिया। गेहूं पिसाकर लौटा, तो तुम्हारे दादाने गाय दुहनेको कह दिया। गाय दुही, तो घास काटकर लानेका हुक्म चला दिया। मैंने कहा कि स्कूलका काम करना है, तो तुम्हारे दादाजी मुझपर वह कोनेमें रखी बेंत लेकर पिल पड़े...!" डैडीने बेंतकी ओर इशारा किया। सब हंसने लगे।

"रामलाल...!" दादाजीके सब्रका प्याला भर चुका था।

"दादाजी तो कंससे भी बड़े अत्याचारी थे!" राजूने अपना निर्णय दिया।

"अलाउद्दीन खिलजीको भी मात...!" पिकीने अपनी इतिहासकी जानकारी देनी चाही।

"बको मत!" डैडीने एकाएक गंभीर होकर डांटा: "फिर भी हमारे दिलमें कभी हड़तालका विचार नहीं आया, क्योंकि हमारे पास फालतू बातें सोचनेका समय नहीं था। कोई शिकायत है, तो हमें बताओ, अध्यापकोंसे कहो। हड़तालके खयाल उन्हें सूझते हैं, जो निठल्ले होते हैं।"

बातने यह कैसा नया रुख ले लिया, तीनों बच्चोंकी समझमें न आया। दादाजीके चेहरेपर विजय-भाव चमकने लगा।

तभी डैडी बोले, "बोलो, तुम निठल्ले हो?"

"नहीं," तीनोंने एक साथ कहा।

"फिर हड़तालकी बात कैसी? क्यों तुम लोग समयसे पढ़ते-खेलते नहीं हो?"

"कैसी हड़ताल?" तीनोंके मुंहपर आश्चर्यके भाव थे।

"कैसी हड़ताल! मैं बताता हूं," कुर्सीपरसे उठकर दादाजी गरजे, "वह हड़ताल जो पंद्रह फरवरी बुधवारको तुम लोग करने जा रहे हो। जिसकी तैयारी तुम इक्कीस जनवरीसे कर रहे हो। तुम सोचते हो डैडी दफ्तरमें हैं, मम्मी रसोईमें हैं, कौन हमारी बातें सुनेगा...!"

"बुधवार पंद्रह फरवरी? उस दिन तो हम पिकनिक मना रहे हैं। तेरह-चौदहको स्कूलका

लेते थे। जेब-खर्च हमें
लता था, उसका भी

बड़े अत्याचार हुए!"
भूति दिखाई।
ा, मैं स्कूलसे लौटा, तो
र लादकर एक मील दूर
। गेहूं पिसाकर लौटा,
दुहनेको कह दिया।
र लानेका हुक्म चला
का काम करना है, तो
वह कोनेमें रखी बेंत
डीने बेंतकी ओर इशारा

दादाजीके सबका

ो बड़े अत्याचारी थे!"
।
को भी मात . . .!"
जानकारी देनी चाही।
एकाएक गंभीर होकर
दिलमें कभी हड़तालका
हमारे पास फालतू
था। कोई शिकायत
कोंसे कहो। हड़तालके
ठल्ले होते हैं।"
रुख ले लिया, तीनों
। दादाजीके चेहरेपर

ो, तुम निठल्ले हो?"
साथ कहा।
त कैसी? क्यों तुम
हों हो?"
नोंके मुंहपर आश्चर्य-

बताता हूं," कुर्सीपर-
'वह हड़ताल जो पंद्रह
ग करने जा रहे हो।
जनवरीसे कर रहे
तरमें हैं, मम्मी रसोई-
गा . . .!"
? उस दिन तो हम
ह-चौदहको स्कूलका

पराग

'पराग' वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता

२००० रु. के पुरस्कार

*** प्रथम पुरस्कार १००० रु. * द्वितीय पुरस्कार ६०० रु. * तृतीय पुरस्कार ४०० रु.**

'पराग' मौलिक हिन्दी बाल एकांकियोंके लिए ५००–५०० रु. पुरस्कारकी दो प्रतियोगिताएं सफलताके साथ आयोजित कर चुका है।

हिन्दी बाल-साहित्यमें एक और विधाकी कमी अनुभव की जाती रही है—वैज्ञानिक कहानी। अंग्रेजीका साहित्य इससे समृद्ध है, किंतु हिन्दीके प्रौढ़ साहित्यमें भी इसकी भारी कमी है। विज्ञान और उसकी संभावनाओंके प्रति भारतीय बच्चोंमें कुतूहल उत्पन्न करनेके लिए यह वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता घोषित की जा रही है। प्रतियोगितामें भेजी जाने वाली कहानियां सर्वथा मौलिक होनी चाहिएं। उनका आधार, वातावरण, कथानक किसी भी विदेशी भाषासे लिया हुआ नहीं होना चाहिए। वैज्ञानिक तथ्योंपर मुक्त कल्पना वांछित है, किंतु बाल-सुलभ मनोरंजन चुनी हुई कहानियोंका प्रधान गुण माना जाएगा। हमें आशा है कि हिन्दीके जिन कथाकारोंने वैज्ञानिक कथा-साहित्यका अनुशीलन किया है वे इस बड़े अनुष्ठानमें हमारा हाथ बंटाएंगे।

नियम

१– कहानी कमसे कम १०,००० से १५,००० (लगभग २५ से ३५ फुलस्केप टाइप पृष्ठ) शब्दोंके बीच होनी चाहिए।

२–मुख्य पात्रोंकी वेशभूषाओं, विशेषताओं आदिका क्रमबद्ध परिचय अलग कागजपर आना चाहिए, जिसके आधारपर उनके चित्र बन सकें।

३–लिफाफेके ऊपर बायें कोनेपर 'पराग वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता' लिखा होना चाहिए।

४– कहानी अनिवार्यतः अप्रकाशित, अप्रसारित तथा मौलिक होनी चाहिए। अनूदित, रूपांतरित या अन्य भाषाओंके आधारपर लिखित कहानियोंपर विचार नहीं होगा।

५–प्रत्येक कहानीकी पांडुलिपिके ऊपर एक और कोरा कागज अलगसे लगा होना चाहिए, जिसपर लेखकका पूरा पता, कहानीका शीर्षक, भेजनेकी तिथि आदि दर्ज हों। पांडुलिपिके अंतमें भी लेखक-लेखिकाका पूरा पता होना चाहिए।

६– अस्वीकृत कहानियोंको उसी दशामें वापस किया जाएगा, जब कि प्रेषकका पता लिखा व टिकट लगा लिफाफा संलग्न होगा।

७– पांडुलिपि कागजकी एक ओर स्पष्ट, सुपाठ्य व स्वच्छ अक्षरोंमें लिखी अथवा टाइप की हुई होनी चाहिए। कृपया टाइपकी मूल प्रति ही भेजनेका कष्ट करें।

८– समस्त पांडुलिपियां हमें अधिकसे अधिक १५ अगस्त १९६७ तक मिल जानी चाहिएं। पुरस्कार विजेताओंके नाम 'पराग'के नवंबर १९६७ के अंकमें प्रकाशित होंगे। इस प्रतियोगिताके संबंधमें किसी प्रकारका पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा। अतः पांडुलिपिके साथ कोई पत्रादि न रखें।

९–पुरस्कृत व स्वीकृत कहानियोंका प्रथम प्रकाशनाधिकार 'पराग' का होगा। इसके बाद कापीराइट लेखकका रहेगा।

१०– कहानियां इस पतेपर भेजी जाएं — संपादक, 'पराग' (वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।

११–यदि इस प्रतियोगितामें उपयुक्त तथा वांछित स्तरकी कहानियां प्राप्त न हुईं, तो संपादक 'पराग' को एक, दो या तीनों पुरस्कार रोक लेनेका अधिकार होगा।

इंस्पेक्शन है, सो पंद्रहकी छुट्टी होगी। हम पिकनिककी बातें कर रहे होंगे।" पिकीने दादाजीका विरोध किया।

"तुम मुझे चरका नहीं दे सकते," कहते हुए दादाजी गोलीकी तरह बच्चोंके कमरेमें घुस गए और वही कार्ड-बोर्ड उठा लाए जिसपर लिखा था—'हमारी मांगें पूरी करो'।

"अरे अरे! पिताजी!" डैडी हड़बड़ाकर बोले, "यह तो मेरा है। दो महीने पहले जब मंहगाई-भत्ता बढ़ानेके लिए एक दिनकी हड़ताल की थी, तब बनवाया था।"

उसके बाद बच्चोंके ठहाकोंके बीच दादाजीकी खिसियानी सूरत देखने योग्य थी। ●

९।६७०३ देवनगर, नई दिल्ली–५।

नमक सत्याग्रह के सिलसिले में गांधीजी के नेतृत्व में आयोजित ऐतिहासिक 'दांडी कूच'

देश की आजादी के तख्ते पर चढ़ ज
अपने सहयोगी

हमारे स्वतंत्रता संग्राम के बोलते चित्र

देश की आजादी की खातिर हंसते हंसते फांसी के तख्ते पर चढ़ जाने वाले क्रांतिवीर भगतसिंह अपने सहयोगी राजगुरु और सुखदेव के साथ

नन्हे बहादुरो, बीस साल पहले हमारे देशपर इंग्लैंडके राजाका शासन चलता था और हमारे देशवासी अंग्रेजोंकी गुलामीमें दिन काट रहे थे। इस गुलामीसे छुटकारा पाने और अपने देशका शासन अपने चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा चलानेकी इच्छासे हमने एक लंबी लड़ाई की। लेकिन यह लड़ाई दो तरीकोंसे लड़ी गई—एक ढंग था हिंसाका और दूसरा था अहिंसाका। हिंसाके द्वारा लड़ने वाले क्रांतिकारी कहलाए जिनमें चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सुखदेव आदि भारत माताकी आनपर मरमिटने वाले अनेक नवयुवक शामिल थे। अहिंसाके द्वारा अंग्रेजोंको यहांसे भगाने वालोंके नेता थे महात्मा गांधी। गांधीजीने इसी ढंगकी लड़ाईका श्रीगणेश अपने नमक सत्याग्रह नामक आंदोलनसे किया और नमक कानून तोड़नेके लिए अपने साथियों सहित दांडीकी तरफ चले। यही इतिहासमें 'दांडी कूच' के नामसे प्रसिद्ध है।

आखिर १५ अगस्त १९४७ को अंग्रेज यहांसे चले गए। पंडित जवाहरलाल नेहरू हमारे प्रधान मंत्री बने और उन्होंने पहली बार दिल्लीके लाल किलेपर उस दिन स्वतंत्रताकी घोषणा करने वाला तिरंगा फहराया।

हमारे स्वतंत्रता-संग्रामकी ये तीनों झांकियां श्रीमती सुशीला रजनी पटेलने विशेष गुड़ियाएं बनाकर तैयार की थीं और इनकी रंगीन पारदर्शियां 'पराग' कला विभागने।

आखिर में देशभक्तों का बलिदान रंग लाया, देश आजाद हुआ और १५ अगस्त १९४७ को बच्चों के चाचा नेहरू ने लाल किले पर तिरंगा फहराया

बोपदेव बड़ा शरारती और नटखट लड़का था। एक दिन शामको उससे एक गलती हो गई। मांने उसे बुरी तरह पीटकर ईश्वरसे नेक बना देनेकी प्रार्थना करनेको कहा। उसने ईश्वर से प्रार्थना की— "हे ईश्वर, मेरी शरारत और मेरे नटखटपनको दूर करके मुझे एक अच्छा लड़का बना दो और जब आप इतना उपकार करने आएं, तो माताजीका क्रोध भी अपने साथ ले जानेकी कृपा करें!"

•

शिक्षक : "गप्पू, क्या तुम बता सकते हो कि टेलीफोनके तार इतनी ऊंचाईपर क्यों लगे रहते हैं?"

गप्पू : "ताकि कोई बातचीत न सुन ले!"

•

कदका छोटा एक स्वयंसेवक एक चौराहेपर लोगोंको सड़क पार करनेमें मदद कर रहा था। एक बूढ़ी औरत काफी देरसे सड़क पार करनेके लिए खड़ी थी। वह स्वयंसेवक उस औरतको सड़क पार करा देनेकी नीयतसे उसके पास जा खड़ा हुआ और बोला– "क्या मैं आपके साथ सड़कके उस पार तक चलूं?"

उस औरतने स्वयंसेवककी ओर देखा। सहानुभूति दिखाते हुए उसने कहा– "शायद तुम काफी देरसे सड़क पार करनेके लिए खड़े हो! किसीने तुम्हारी सहायता नहीं की? खैर, लो आओ, मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें सड़क पार करा दूंगी; घबरानेकी कोई बात नहीं!"

•

मां : "गप्पू, कोठरीकी उस टोकरीमें तीन आम थे और अब एक ही रह गया है? यह कैसे हुआ?"

गप्पू : "मां, वहां इतना घुप्प अंधेरा था कि मैं तीसरेको देख ही न सका!"

•

विजय बड़ा कामचोर लड़का है। पढ़ने-लिखनेके बजाय वह दिनभर लट्टू नचाता रहता है। परेशान होकर एक दिन उसके पिताने उसे समझाया : "यह लट्टू नचाना छोड़ कुछ काम-धाम करो। सामनेकी दीवारपर मकड़ेको देखो। कितने परिश्रमसे वह जाला तैयार कर रहा है! इससे भी कुछ सीखो। यह इतना मामूली प्राणी होकर भी कितना सुंदर जाला बना रहा है! लाख कोशिश करनेपर भी तुम ऐसा नहीं बना सकते।"

"तो क्या हुआ!" लट्टू नचाते हुए विजयने कहा, "देखिए मैं किस खूबसूरतीसे लट्टू नचा रहा हूं। लाख कोशिश करनेपर भी यह मकड़ा इस तरह लट्टू नहीं नचा सकता!"

•

एक लड़का दो गदहोंके साथ साथ चल रहा था। इसी बीच एक पुलिसकी गाड़ी वहां आकर खड़ी हो गई। एक पुलिसमैनने मजाक किया: "क्यों जी, अपने भाइयोंसे कंधेसे कंधा मिलाकर चल रहे हो?"

लड़केने कहा : "जी हां, डर रहा हूं कि छोड़ देनेपर कहीं दोनों भागकर पुलिसमें भरती न हो जाएं!"

•

गप्पूके पिताने उसे स्कूलके बाद सीधे घर आ जानेकी सख्त हिदायत की। कहीं भी और किसीके साथ खेलते हुए पाए जानेपर उसे कड़ी सजाकी धमकी भी दी। इससे वह रोज सीधे घर आने लगा, पर एक दिन वह धमकी भूल गया। उस दिन वह काफी रात गए, थका-हारा, धूल-कीचड़से भरा हुआ घर लौटा। पिताने उसे डांटते हुए पूछा– "तुम्हें अपनी प्रतिज्ञा याद है न? तुमने कहा था कि तुम रास्तेमें न कहीं रुकोगे और न खेलोगे, सीधे घर आओगे।"

"हां, पिताजी," उसने धीमी आवाजमें कहा।

"इसमें भूल होनेपर मैंने तुम्हें सजा देनेकी

बात कही थी न?"

"हां, पिताजी," उसने कहा।

"तो फिर अब

"यही कि जैसे वैसे ही आप भी अ धीरेसे गप्पूने कहा

दो डींग हांकने वा रहे थे। एकने शिकार खेलने गय रह गई और सि जंगलमें निकल पड़ टूट पड़ा। झट मैंने सिरपर छिड़क दि खड़ा हुआ!"

दूसरेने कहा– बिल्कुल सच; क्योंकि ओर झपटा। मैंने पटक दिया। वाकई

सिपाही (एक देह पर क्यों ब किनारे चलो।"

देहाती : "खुद दूसरोंको किनारे कि हो!"

जज (चोर से) सूटकेस क्यों चोर : "हुजूर काम करते हैं, उ

बात कही थी न?"

"हां, पिताजी," काफी धीमी आवाजमें उसने कहा।

"तो फिर अब क्या चाहते हो?"

"यही कि जैसे मैंने अपना वादा नहीं निभाया, वैसे ही आप भी अपने वादेपर अमल न करें!" धीरेसे गप्पूने कहा।

•

दो डींग हांकने वाले कुछ लोगोंके सामने डींग हांक रहे थे। एकने कहा—"एक बार मैं जंगलमें शिकार खेलने गया। संयोगसे बंदूक खेमेमें ही रह गई और सिर्फ पानी वाला थैला लेकर मैं जंगलमें निकल पड़ा। एकाएक एक शेर मुझपर टूट पड़ा। झट मैंने थैलेसे पानी निकालकर उसके सिरपर छिड़क दिया। बस, इतनेसे ही वह भाग खड़ा हुआ!"

दूसरेने कहा—"और आपकी यह बात है भी बिल्कुल सच; क्योंकि वह शेर वहांसे भागकर मेरी ओर झपटा। मैंने उसे सिरके बाल पकड़कर पटक दिया। वाकई उसके बाल भीगे हुए थे!"

•

सिपाही (एक देहातीसे): "अरे, तुम बीच सड़कपर क्यों चल रहे हो? सड़कके किनारे किनारे चलो।"

देहाती: "खुद तो बीच सड़कमें खड़े हो और दूसरोंको किनारे किनारे चलनेकी सलाह दे रहे हो!"

•

जज (चोर से): "तुमने यह नए कपड़ोंका सूटकेस क्यों चुराया?"

चोर: "हुजूर, अदालतमें अच्छे अच्छे लोग काम करते हैं, उनके सामने फटे-पुराने कपड़े पहनकर आते हुए शर्म आती है!"

•

फकीर: बाबूजी, एक पैसेका सवाल है!"

गप्पू: माफ भी करो, बाबा, मैं हिसाबमें बड़ा कमजोर हूं!"

•

गोविंद झा

एक साहब पप्पूके डैडीसे मिलने आए। दरवाजेपर आकर दस्तक दी, तो पप्पूने दरवाजा खोला। उन सज्जनने पूछा—"क्यों, मुन्ने, तुम्हारे डैडी घरमें हैं?"

पप्पू बोला—"जी नहीं।"

"तो फिर कहां हैं?"

"छतपर धूपमें अखबार पढ़ रहे हैं!" पप्पूका जवाब था।

•

दो पुलिस मैन घरमें सो रहे थे। घुप्प अंधेरा था। इतनेमें खटखटकी आवाजसे एककी आंखें खुल गईं। उसने धीरेसे दूसरेको जगाया: "उठो जी, घरमें चोर घुस आया है।"

इसपर दूसरेने कहा—"सो जाओ, तुम्हें क्या करना है। जिसकी ड्यूटी होगी वह अपने आप पकड़ेगा!"

•

पप्पू—"गप्पू, तुम तो कह रहे थे कि तुम परीक्षामें पास हो गए हो, पर तुम्हारा नंबर अखबारमें तो नहीं छपा!"

गप्पू—"अखबारमें जगह नहीं बची होगी। देखा नहीं, अखबारके सभी पन्ने भरे हुए थे!"

•

रमेश: "गप्पू, कहीं आज धरती उलट गई, तो कल क्या होगा?"

गप्पू: "यह समाचार कल अखबारमें मोटे मोटे अक्षरोंमें छप जाएगा!"

•

सोहनके पिताजीने उसे हारमोनियम खरीद दिया। सोहन उसे जब-तब बजाया करता था। तंग आकर पिताने उसे बेच देनेकी धमकी दी। इसपर सोहनने कहा– "ऐसा मत कीजिए। अबसे, जब आप सो जाएंगे, तभी बजाऊंगा!"

•

एक मुसाफिर (गप्पूसे): "भाई, यह सड़क कहां जाती है?"

गप्पू: "कहीं नहीं, यहीं लटी रहती है!" •

kissekahani.com

नार्वे की एक अद्भुत पौराणिक कथा :

थोर की अद्भुत यात्रा

थोर नार्वे देशका इंद्र देवता है। हमारे इंद्र देवता-की तरह वह भी अपार शक्तिका स्वामी है।

नार्वेमें एक जमाना ऐसा था, जब हमारे देशकी तरह वहां भी असुरोंका जोर था। वे विशालकाय असुर आसानीसे हारते न थे। जब वे अपना वेश बदल लेते थे और झूठ बोलना शुरू कर देते थे, तो प्रायः जीत जाते थे।

एक दिन क्या हुआ कि ज्यों ही सूरजने कोहरेमेंसे अपना सिर निकालकर पृथ्वीके ऊपर झांकना शुरू किया, नार्वेके स्वर्ग 'असगार्द'के द्वार खुले। उसमेंसे थोरका रथ धड़धड़ाता हुआ बाहर निकला। उसको बकरियां खींच रही थीं। उसमें थोर और एक अन्य देवता लोकि सवार थे। ये दोनों एक साथ असुरोंका मान मर्दन करने जा रहे थे।

सारे दिन थोरका रथ पहाड़ोंकी तराइयों और घासके मैदानोंमें दौड़ता रहा। जहां जहांसे वह गुजरता था, बिजलीकी कड़क और पानीका तूफान अपनी भयंकर आवाजोंसे आकाश गुंजा देते थे। रातके समय वे दोनों एक गरीब किसानके दरवाजेपर रुके। थोर रथसे उतर-कर नीचे आया और उसके दरवाजेके भीतर पहुंचा।

"भाई, रात भरके लिए दो यात्रियोंको ठहरा सकते हो क्या?" उसने पूछा।

"जरूर जरूर—लेकिन हम तुम्हें खाने-पीनेको कुछ

नहीं दे सकते क्योंकि
"तुम लोग इस
होता हुआ बोला,
इंतजाम कर दूंगा
वह लोकीके पास
से उतर आया। इसके
ने क्या देखा कि थो
काट डाला और मि
तैयार हो गई। खाने
कुछ ही देरमें सबके
बैठ गए।
"भाइयो, खूब
मुझे मजा आएगा।

नहीं दे सकते क्योंकि हमारे लिए भी कुछ नहीं है।"

"तुम लोग इसकी चिंता न करो," थोर प्रसन्न होता हुआ बोला, "मैं सारे घरवालोंके लिए खानेका इंतजाम कर दूंगा।"

वह लोकीके पास वापस रथपर पहुंचा। लोकी रथपरसे उतर आया। इसके बाद किसान तथा उसके घरवालोंने क्या देखा कि थोरने अपने रथकी दोनों बकरियोंको काट डाला और मिनिट भरमें वे चूल्हेपर चढ़नेके लिए तैयार हो गईं। खानेकी सुगंधसे सारा घर भर गया और कुछ ही देरमें सबके सब हाथ-पैर धोकर खानेके लिए बैठ गए।

"भाइयो, खूब खाओ। जितना खाओगे उतना ही मुझे मजा आएगा। बस, एक बातका ध्यान रखना। हड्डियां मत तोड़ना। बाहर चौतरेपर मैंने दोनों बकरियोंकी खालें फैला दी हैं। हड्डियां तुम उनके भीतर फेंकते रहना।"

किसानके दो बच्चे थे—एक लड़का जालफ़े, एक लड़की रोस्क्वा। किसान पति-पत्नी और उन दोनों बच्चोंने खूब डटकर खाया। लेकिन जालफ़ेने एक हड्डीके भीतरका मसाला निकालनेके लिए उसे तोड़ डाला। अगले दिन सुबह थोर सूरजके साथ साथ उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी पोशाक पहनी और हथौड़ा उठाकर उसे उन खालोंके ऊपर घुमाया। फौरन सारी हड्डियां फुदक फुदककर अपने अपने स्थानपर आ लगीं। खाल उनके ऊपर अपने आप मंढ गई, और लो, फिर पहले दिनकी तरह ही जीती-जागती बकरियां खड़ी हो गईं। बस, कसर एक ही रह गई कि एक बकरी उनमेंसे लंगड़ाने लगी।

जब थोरने यह माजरा देखा, तो वह गुस्सेसे लाल-पीला होने लगा। उसके क्रोधसे धरती और आकाश कांपने लगे। जालफ़े और उसके पिता-माता-बहन सब थोरके क्रोधसे थर थर कांप रहे थे। उनका बोल ही नहीं निकल पा रहा था।

किसान और उसकी पत्नी थोरके पैरोंमें गिर पड़े और उससे माफी मांगने लगे। जब थोरने उनकी इस दयनीय दशापर विचार किया, तो उसने कहा कि माफी तो वह दे देगा, लेकिन उन्हें अपने दोनों बच्चोंको थोरके साथ कर देना पड़ेगा। किसान दंपति इसके लिए तैयार हो गए। थोरने दोनों बकरियोंको वहीं उनकी देखरेखमें छोड़ा और लोकी, जालफ़े व रोस्क्वाके साथ निकल पड़ा।

सारे दिन वे लोग पूरबकी तरफ चलते रहे। शीघ्र ही वे एक जंगलके बीचसे होकर गुजरे। जाल के दौड़में तेज था, इसलिए साज-सामानका थैला उसने अपने कंधेपर लाद रखा था। रात पड़ते ही उन लोगोंने कहीं सिर छिपानेकी जगह ढूंढ़नी शुरू कर दी। चलते चलते वे एक विशाल भवनके सामने पहुंचे, जिसका मुंह एक पहाड़की विशाल कंदराकी तरह खुला हुआ था। जब वे उसके अंदर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि वे एक विराट हालनुमा कमरेके अंदर खड़े थे। उस विराट कमरेसे पांच कंदराओंमें रास्ते जाते थे। वे ऐसी ही जगह चाहते थे। पर इसका उन्हें बड़ा आश्चर्य था कि ऐसी सुनसान जगह इतनी बड़ी इमारत किसने क्यों खड़ी की होगी! जो भी हो, खूब छककर खाने-पीनेके बाद वे जल्दी ही निद्रा देवीकी गोदमें लुढ़क गए।

तीन-चार घंटे तो शांतिके साथ गुजर गए। लेकिन आधी रातके लगभग एक ऐसी गर्जना उन्हें सुनाई पड़ी, जिससे धरती कांपने लगी और उस इमारतकी चूलें भी हिल गईं। थोरने अपने साथियोंसे कहा कि वे भीतरी कंदराओंमें चले जाएं। वे तो डरके मारे पहलेसे ही कांप रहे थे—फौरन भीतर घुस गए। थोर अपना हथौड़ा लेकर बाहरके चौड़े मुंहपर आ बैठा और वहीं पसर गया।

जैसे ही रोशनी इतनी हो गई कि आसपास दिखाई पड़ने लगा, थोर जंगलके भीतर घुस गया। कुछ दूर जानेपर वह ऐसे

असुरके सामने
विशाल पर्वतकी त
पड़ा पड़ा खुरटि ले
आसपासके ऊंचे वृ
शक्तिकी पेटी कमर
उठा और उछलक
धरती भी कांपने ल
था, मानो किसी ता
खड़ा हो। थोरने कभी
था। उसके लिए ड
लेकिन वह भोले आ

उसके विराट
"कौन हो तुम?"

"मेरा नाम
पूछनेकी मुझे कोई
जानता हूं कि तुम
दस्तानेके साथ तुमने

और इतना क
और दस्ताना उठा
जिसके भीतर थोर
थी! अच्छा, तो
दस्ताना था!

"मैं भी तुम्हारे
पूछा।

"जरूर चलो,"
को खूब अच्छी तरह
दोनोंको ही उसका
स्काइमरने अपना
दूसरोंने भी उसकी
लोगोंने अपने इस
बनाए रखा।

नाश्तेके बाद स्क
अपना सामान उसके
तुरंत राजी हो गया
हो गया। इसके बाद
सब उसके पीछे पीछे

सारे दिन असुर

बोला, "मेरी भी आंख खुल गई थी। लेकिन रात अभी और बाकी है इसलिए सो जाओ।"

जब तक असुरकी आंख लगी, थोर उसे ध्यानसे देखता रहा। फिर सुबह होते ही उसने असुरके सिरपर इतने जोरसे हथौड़ा देकर मारा कि आज तक हथौड़ेपर इतना जोर कभी नहीं लगाया था। हथौड़ा असुरके सिरमें धुसकर इस तरह लोप हो गया कि ऊपरसे उसका हत्था तक दिखाई नहीं दे रहा था। असुर तुरंत उछलकर अपने पैरोंपर खड़ा हो गया और दाढ़ी सहलाने लगा।

"अरे, इस पेड़के ऊपर कुछ चिड़ियाएं बैठी हैं क्या?" उसने ऊपरकी ओर देखते हुए कहा, "मुझे लगा मानो कोई पंख उड़ता उड़ता मेरे सिरके ऊपर गिर पड़ा। खैर, छोड़ो। हां, भई थोर, तुम जाग गए? अब जल्दीसे कपड़े पहनो। सफर खत्म होने ही वाला है। उत्गार्द नगर ज्यादा दूर नहीं है। और हां, तुम कह रहे थे कि मेरा आकार बहुत विशाल है। लेकिन उत्गार्दमें तुम्हें और भी बड़े आकारके लोग दिखाई पड़ेंगे। मेरी सलाह मानो, तो वहां पहुंचकर बहुत ज्यादा डींगें न मारने लगना। वे लोग तुम्हारे जैसे नन्हे-मुन्ने आदमीकी डींगें नहीं सुन पाएंगे। अच्छा तो यही है कि तुम पीठ मोड़ो और घरकी तरफ रवाना हो जाओ। लेकिन अगर आगे ही जाना हो, तो पूरबको जाओ। मेरा रास्ता उत्तरकी ओर जाता है।"

स्काइमरने अपना सामानका थैला उठाया और देखते ही देखते जंगलमें गायब हो गया।

थोर और उसके साथी दोपहर तक मारामार चलते रहे। अचानक ही उनके सामने एक बहुत बड़े मैदानके बीचोंबीच एक विशाल नगरका आकार उभरता चला आया। उसकी दीवारें इतनी ऊंची थीं कि उनके ऊपरके सिरे देखनेके लिए उन्हें पीठके बल एकदम दोहरे हो जाना पड़ा।

शहरकी तरफ काफी दूर चलनेके बाद वे लोग एक विराट फाटकके सामने पहुंचे, जो सींखचोंसे भली प्रकार बंद था। लेकिन वे लोग आसानीसे सींखचोंके बीचसे होकर भीतर पहुंच गए। शहरकी बड़ी बड़ी सड़कोंपर चलते हुए आखिरकार वे एक बहुत बड़े महलके सामने पहुंचे। चूंकि महलका दरवाजा चौपट खुला हुआ था, इसलिए बिना किसी रोक-टोकके वे उसके अंदर घुस गए।

उन्होंने अपने आपको एक बहुत विशाल हॉलके बीच खड़े पाया। उसके दोनों तरफ लंबी-चौड़ी चौकियां बनी हुई थीं। उनपर स्काइमरसे भी बड़े बड़े असुर बैठे हुए थे। सामने ही एक पर्वताकार सिंहासनपर उस शहरका राजा उत्गार्द-लोकी बैठा था। उन्होंने राजाको नमस्कार किया। लेकिन बहुत देर तक वह यों ही बिना उन लोगोंकी ओर ध्यान दिए बैठा रहा। फिर उन लोगोंकी तरफ हिकारतकी नजरसे देखते हुए वह बोला:

"अगर मैं भूलता नहीं, तो यह नन्हा-सा आदमी थोर है। सुना है कि जितने पौदनेसे तुम दिखाई देते हो, वास्तवमें उतने छोटे नहीं हो। अच्छा, तो फिर बताओ तुम हमें अपनी ताकतके क्या करिश्मे दिखा सकते हो? जब तक कोई यहां आनेके बाद किसी कठिन कामको नहीं कर दिखाता, हम लोग उसे इस शहरमें टिकने नहीं देते।"

राजाकी ये घृणा-पूर्ण बातें सुनकर थोरके साथी लोकीने ऊंचे स्वरमें उत्तर दिया: "एक चमत्कार ऐसा है, जिसमें मेरे बराबर कोई नहीं उतर सकता और मैं

उसे दिखानेके लि
सामान इस तरह ग
लोग देखते ही रह
"सचमुच, यह
नाक-भौं चढ़ाते हुए
पूरे उतरो।" और
एक आदमीको लोक

मांसका एक प
बीच रखा गया। उ
बैठ गए और दोनों
खाते देखकर मुंह को

दोनोंके दोनों
लेकिन एक अंतर
खाया था, जबकि
तरफका बढ़ाहा—
तरफ कुछ भी शेष न
माननी पड़ी।

इसके बाद राजा
"लो, एकने तो दिखा
मुन्ने, तुम क्या अजूबा
"मैं आपके बड़े
सकता हूं," जालफे
"ठीक है। अगर
दौड़कर उसे पछाड़
अजूबा होगा। लेकिन
फुरती होना चाहिए।

महलके बाहर हो
सब यह दौड़ देखनेके लि
दुबले बच्चेको जालफे
उसका नाम 'हुगे' था

जबसे संसारका
तरहकी दौड़ कभी नहीं

kissekahani.com

पीले मुख की रोशनी

— देवेश ठाकुर

अमृतसरसे लगा हुआ एक छोटा-सा कस्बा है छरहटा।

उस शाम छरहटामें खुशीकी लहर छा गई थी। रेडियोपर खबर आ चुकी थी कि अगले दिन दोपहर बाद हिन्दुस्तान और पाकिस्तानकी लड़ाई बंद हो जाएगी। बड़े-बूढ़ोंने संतोषकी सांस ली थी और बच्चोंने गलियोंमें शोर मचाना शुरू कर दिया था —

'हिन्दुस्तान : जिन्दाबाद!'

'जय जवान : जय किसान!'

'शास्त्रीजी की : जय हो!'

सुरजीतकौर भी छरहटाके एक मोहल्लमें रहती है। उस दिन उसके यहां ग्रंथ साहबका पाठ हुआ। बादमें उसने सब बच्चोंमें प्रसादी बांटी। वह शाम यों ही खुशियोंमें बीत गई। रातको कामसे थककर जब वह बिस्तरपर लेटी, तो अपने भाई अमरजीतके खयालोंमें खो गई। अमरजीत फौजमें तोपची था और उन दिनों सीमापर लड़ रहा था।

सुरजीत सोचने लगी। उसके भाईने लड़ाईके मैदानमें दुश्मनोंके छक्के छुड़ा दिए। अपनी जानपर खेलकर उसने पाकिस्तानी तोपोंके मुंह फेर दिए। अब लड़ाई खत्म हो गई है। उसका भाई कस्बेमें लौटेगा, तो बस्तीके लोग उसे सिर-आंखोंपर लेनेके लिए टूट पड़ेंगे।

सुरजीतको लगा कि लोगोंकी नजरोंमें उसकी भी इज्जत बढ़ गई है। वह जैसे चौदह सालकी लड़की न होकर तीस-पैंतीस सालकी एक गंभीर औरत बन गई है। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने सोचा कि भाईकी बहादुरीपर क्या गर्व करना। काश, वह भी कोई बहादुरीका काम कर पाती!

और इन्हीं खयालोंमें खोई हुई वह जल्दी ही सो गई।

सवेरे जब वह उठी, तो दिन चढ़ चुका था। उसने जल्दी जल्दी हाथ मुंह धोया और स्कूल जानेकी तैयारी करने लगी। कपड़े पहनकर जब वह बाहर निकली, तो पड़ोसीके घरमें आवाज लगाई—"प्रीति...प्रीति...!"

प्रीति सरदार हजारासिंहकी बड़ी मासूम-सी बेटी थी। कोई पांच सालकी होगी। इसी साल स्कूल जाना शुरू किया था। वह बचपनसे ही सुरजीतसे हिली हुई थी, इतनी कि कभी कभी प्रीतिकी मां अपने घरसे ही सुरजीतको आवाज लगाती—'सुरजीत, प्रीति नहाती नहीं। आकर जरा इसे नहला दे।'

और सुरजीतसे प्रीति हंसते हंसते नहा लेती।

कल प्रीति सुरजीतसे रूठ गई थी। स्कूलसे

कहानी

लौटते हुए उस
'दीदी, बनजारेव
सुबह अधूरी रह
सुरजीत अ
बातोंमें खो गई
घरमें सुनाऊंगी।
'नहीं, अभी
सुरजीत क
सुनाती। जा, मर
और बस इ
गई थी। आज प्री
जब सुरजीत
दरवाजेपर तैयार
देखकर उसने मुंह
सुरजीत बोल
कौन सुनेगा?"

लौटते हुए उसने सुरजीतसे कहा था—'दीदी, बनजारेवाली कहानी पूरी कर दो, सुबह अधूरी रह गई थी।'

सुरजीत अपनी दूसरी सहेलियोंकी बातोंमें खो गई थी। बोली—'शामको घरमें सुनाऊंगी।'

'नहीं, अभी सुनाओ।'

सुरजीत खीझ गई – 'चल, नहीं सुनाती। जा, मर गया तेरा बनजारा!'

और बस इत्ती-सी बातपर प्रीति रूठ गई थी। आज प्रीतिको आवाज लगाते हुए जब सुरजीत बाहर निकली, तो वह दरवाजेपर तैयार खड़ी थी। सुरजीतको देखकर उसने मुंह फेर लिया।

सुरजीत बोली—"बनजारेकी कहानी कौन सुनेगा?"

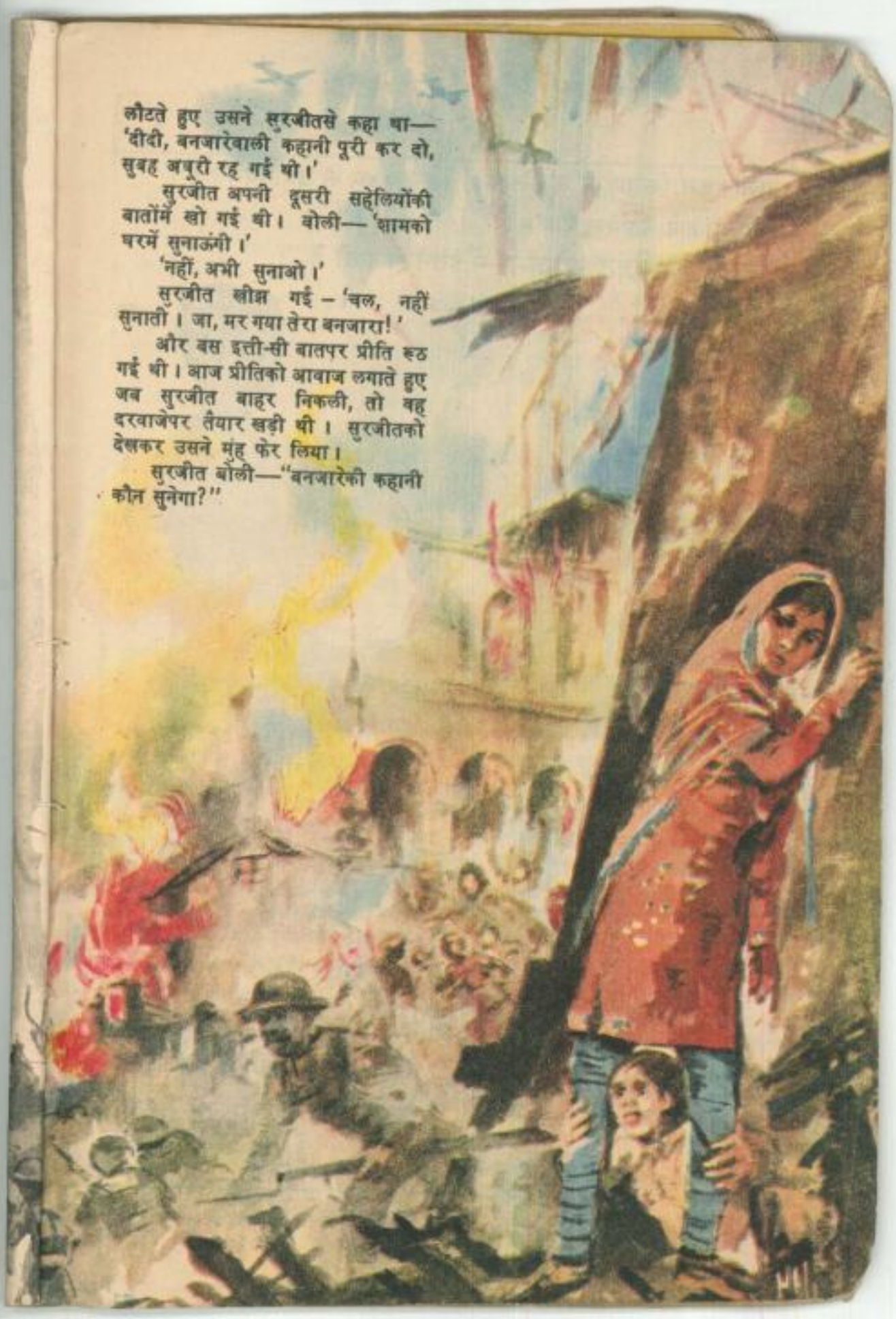

प्रीतिने देखा और सुरजीतकी ओर पीठ फेरकर खड़ी हो गई।

प्रीतिको सुनाते हुए सुरजीतने शुरू किया : "एक था बनजारा। जब वह बांसुरी बजाता, तो कलियां फूल बन जातीं, फल पक जाते, कोयल चुप हो जाती, गायोंके थन दूधसे भर भर आते। और एक थी बनजारिन . . ."

प्रीतिने सुरजीतकी तरफ देखा और मुस्करा पड़ी। अब दोनों साथ साथ स्कूल जा रही थीं। सुरजीत उसे बनजारेकी कहानी सुना रही थी :

"एक दिन बनजारिनने बनजारेकी मुरली ले ली और लगी बजाने। इस पर बनजारेकी सब गायें हंसने लगीं और बछड़े भी. . ."

"फिर क्या हुआ? प्रीतिने पूछा।"

इससे पहले कि सुरजीत कहानीको आगे बढ़ाती, पलक मारते ही छरहटेका आसमान पाकिस्तानी जहाजोंसे भर गया। दुश्मनने हवाई हमला कर दिया था।

चारों तरफ हाहाकार मच गया।

आग-धुआं और धूल—सारी बस्ती उजड़ गई। अभी अभी जहां रौनक थी, तुरंत वहां सब कुछ भयानक बरबादीमें बदल गया।

प्रीति सुरजीतकी टांगोंसे चिपकी हुई खड़ी कांप रही थी। धूल और धुएंके बादलोंके बीच कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसके ऊपर दूकानका एक छज्जा था। आसपास कोई नहीं था। तभी पासमें ही जोरका धड़ाका हुआ और दूसरे ही पल पूरा छज्जा सुरजीतके ऊपर आ गया। उसने महसूस किया कि मलबेका एक बड़ा-सा ढेर उसके ऊपर एक तख्तेके सहारे रुका हुआ है। उसके पैरोंके पास प्रीति खड़ी थी। उसने सोचा कि अगर वह थोड़ी-सी भी हिली, तो सारा मलबा प्रीतिपर आ पड़ेगा और फिर. . .आगेकी कल्पना मात्रसे सुरजीतको पसीना आ गया।

वह दम साधे हुए उस भारी बोझको अपने कंधों पर संभाले रही। प्रीति बीचमें फंस गई थी लेकिन सुरजीतके कारण वह अभी सुरक्षित थी।

लेकिन अधिक देर तक सुरजीतके लिए उस बोझको संभालना मुश्किल हो गया। आखिरमें वह लड़खड़ाकर एक ओरको झुक गई।

प्रति मास नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंककी कहानियां ध्यानसे पढ़ो और हमें २० अगस्त तक लिखो कि अपनी पसंदके विचारसे कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियोंपर अपनी पसंद बतानी है। इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे, केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'मजेदार कहानियां' के अंतर्गत आया है। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम बहुमतसे मिलेगा, 'पराग' में उन सबके नाम छपे जाएंगे और उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कारमें भेजेंगे। अपनी पसंद एकदम अलग कार्डपर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदिके कार्डोंपर नहीं। अपनी उम्र भी अवश्य लिखो। पता यह लिखो—**संपादक, 'पराग (हमारी पसंद—८)', पो. बा. पास्ट नं. २१३, टाइम्स ऑफ इंडिया, बिल्डिंग, बम्बई—१।**

हवाई हमलेको हुए तीन-चार घंटे बीत चुके थे। अभागे छरहटेमें मौतका सन्नाटा छाया हुआ था। स्वयंसेवकोंके जत्थे मलबेमेंसे लाशों और घायलोंको निकालनेका काम शुरू कर चुके थे।

अचानक एक जगहसे किसी बच्चेके रोनेकी आवाज सुनकर लोगोंने वहांसे मलबा हटाना शुरू किया। कुछ ही देरमें उन्होंने देखा—दो बच्चियां मलबेके नीचे जिंदा दबी पड़ी हैं। बड़ी बच्ची छोटीपर झुकी हुई है और छोटी बच्ची उसकी टांगोंके बीचमें असहाय रो रही है।

बड़ी बच्ची बेहोश हो गई थी। यह सुरजीत थी। जल्दी ही उसे उठाकर अस्पतालमें दाखिल कर दिया गया।

वहां धीरे धीरे वह ठीक होती गई। जिस दिन सुरजीतको अस्पतालसे छुट्टी मिली, उसी दिन शामको सुरजीतका भाई आने वाला था।

घर आकर सुरजीत अपनी बीमारी और कमजोरीकी बात भूलकर भाईके स्वागतकी तैयारियां करने लगी। उसके पीले मुखपर गौरवकी रोशनी झलक रही थी और नन्ही प्रीति सुरजीतके काममें हाथ बंटा रही थी। ●

प्रोफेसर्स फ्लैट्स, सइया कॉलेज हॉस्टल, कोलबाड़ा, शीव, बम्बई—२२।

kissekahani.com

चीन की एक आलसी कहानी

आलसियों का उस्ताद : आह फुन

डाक्टर चू पिंग भला आदमी था। मेहनती था, अकलमंद था, साथ ही उसकी चुटिया भी खूब लंबी थी। न जाने उसके किन पाप-कर्मोंके कारण उसके यहां आह फुन जैसा आलसी बेटा पैदा हुआ था। शायद यह ऐब आह फुनको अपने बाबासे मिला था। लोग कहते थे कि उसका बाबा इतना आलसी था कि नए सालके दिन बत्तियां जलाते हुए भी उसे आलस आता था। राक्षसोंको घरसे दूर रखनेके लिए वह तांबेका बरतन भी न बजाता था। खैर, अब आह फुनकी ही बात करें।

आह फुन बचपनसे ही बहुत आरामतलब था। सभी जानते हैं सुस्त लोग निर्लज्ज भी होते हैं—मगर आह फुन तो उन सबसे बढ़कर बेशरम था—एकदम घोंघाबसंत; एक बारकी बात सुनो :

एक थीं श्रीमती चैंग। वह बीमार हो गईं। बदकिस्मतीसे उन्होंने डा. चू पिंगका इलाज कर लिया। डा. चू पिंगने अपने आलसी बेटेको बुलाया। उसे बांसकी नलीमें ईंटका चूरन भरकर दिया। फिर कहा कि इसे श्रीमती चैंगको दे आओ। श्रीमती चैंग की तेज बुखारमें फुंक रही थीं। दवाईकी उन्हें सख्त जरूरत थी—एकदम जल्दी। लेकिन क्या तुम समझते हो कि आह फुनने उन्हें जल्दीसे दवाई पहुंचा दी होगी? राम भजो! दवाईकी नली बगलमें दबाकर आह फुन घरसे निकला। उसे लगा कि अब मौका है, सो पेड़ों-

के पत्ते गिन लेने
उस समय श्रीम

यह घटन
रहता था। एक
उन्हें उसका दु
इसलिए उन्होंने
उसका विचार
लेंगे। लेकिन
पत्थर मिल गय
चला। एक ठो
पहुंचता था। सी

फुन

था, साथ ही उसकी चुटिया
ारण उसके यहां आह फुन
को अपने बाबासे मिला था।
सालके दिन बत्तियां जलाते
के लिए वह तांबेका बरतन

ानते हैं सुस्त लोग निर्लज्ज
था—एकदम घोंघाबसंत;

तीसे उन्होंने डा. चू पिंगका
से बांसकी नलीमें ईंटका चूरन
ओ। श्रीमती चैंग ची तेज
दम जल्दी। लेकिन क्या तुम
ी? राम भजो! दवाईकी
कि अब मौका है, सो पेड़ों-

के पत्ते गिन लेने चाहिएं। जिस समय आह फुन श्रीमती चैंग चीके प्राण बचाने वाली दवाई लेकर पहुंचा, उस समय श्रीमतीजीको स्वर्ग सिधारे तीन दिन हो चुके थे—परमात्मा उनकी आत्माको शांति दे!

यह घटना तो ज्यादा दुखांत है, लेकिन आह फुन तो आए दिन ही ऐसे कारनामे दिखाता रहता था। एक दिन डा. चू पिंगने आह फुनको जंगलसे गाय ढूंढ़ लानेके लिए कहा। उन्हें उसका दूध दुहना था। डा. चू पिंग अपने बछड़ेके दांत खूब पहचानते थे। इसलिए उन्होंने आह फुनको दोपहरको ही जंगलकी तरफ रवाना कर दिया था। उसका विचार था कि वह रात होने से पहले ही गाय लेकर आ गया, तो दूध दुह लेंगे। लेकिन आह फुनको रास्तेमें एक गोल पत्थर मिल गया। वह उसे पैरोंसे लुढ़काता चला। एक ठोकर मारनेसे पत्थर कहींका कहीं पहुंचता था। सीधी सड़क चलना तो उस पत्थर

को आता ही न था। मजबूरन आह फुनको उसे इधर-उधर खेतोंमें खोजना पड़ता था। फिर उसे लाकर सड़कपर रखना पड़ता था और इस बार उसे सजा देनेके लिए कसकर ठोकर मारनी पड़ती थी। पत्थर भी बेचारा कब तक सजा भुगतता! एक बार वह खेतोंमें जाकर ऐसा गुम हुआ कि आह फुनको उसे ढूंढ़नेमें कई घंटे लग गए—फिर भी वह नहीं मिला।

इतना परिश्रमका काम करके आह फुन इतना थक गया कि गाय स्वयं चलकर उसके पास आ जाती, तो भी उसे लेकर तुरंत घर लौटना तंदुरुस्ती खराब करना था। वह दम लेनेके लिए एक पेड़के नीचे बैठ गया। तब तक उसका एक बेकार साथी भी उससे आ मिला। दोनोंने तय किया कि बहुत दिनोंसे उनके बीच शीशेकी गोलियां नहीं खेली गई थीं—बस बाजी जम गई। जब वह उखड़ी, तो रातका अंधेरा चारों ओर छा गया था। ऐसेमें गाय कहां मिलती? आह फुन अपने एक पड़ोसी लाओ मूकी गाय उसके आंगनसे खोल लाया और जाकर अपने आंगनमें बांध दी। देखो, गाय ढूंढ़नेका कितना आसान तरीका था! खैर अब आगे सुनो।

'पराग' के आगामी सितंबर अंक में—

नौ मजेदार कहानियां

- साधु का वरदान : मंगलराम मिश्र
- सोने की मोहरें : सुशीला देवेश
- बेकार का नुकसान : बीना बल्लभ
- दाव-पेंच : अवतारसिंह
- बाबूजी बारात में : विष्णु प्रभाकर
- कड़ आ कड़ आ चू : दीप
- टोटो की करामात : रस्किन बांड
- सत्यमेव जयते : श्रीमती रेवादास
- बैर-भाव की भूल : विद्वान् के. नारायणन्

और

धारावाही साहसिक उपन्यास : शेर का पंजा

तथा

सदा की भांति मनोहर रंगीन चित्र, चुटकुले, कार्टून, ज्ञानवर्द्धक लेख, शिशुगीत, अटपटे चटपटे, खिलौनों का डिब्बा, कार्टून-कथा छोटू-लम्बू—सभी कुछ

अपने एजेंट से अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लो

जब डा. चू पिंग एक बड़ा-सा बरतन गायके थनोंके नीचे रखकर दूध दुहने बैठे, तो गायको बड़ा बुरा लगा। वह लाओ मूके घर तो बहुत कम दूध देती थी। इतना बड़ा बरतन उसके नीचे रखना उसका अपमान करना था। उसने कसकर एक लात डा. चू पिंगको लगाई। डा. चू पिंग लुढ़कनिया खाते हुए दीवारसे जा टकराए। जो दूध दुहा था वह भी बिखर गया। तभी लाओ मू रोता-झींकता आया।

"देखो, डाक्टर साहब, इस शैतानके बच्चे आह फुनने क्या काम किया! मरी ही गाय खोल लाया। अगर आप मेरी बात मानें, तो एक बांस लीजिए और इसकी पीठपर तोड़ दीजिए—जो भी हो, मेरी गाय मुझे दीजिए और दूधके पैसे भी इनायत फरमाइए।"

इतनेमें और पड़ोसी भी इकट्ठे हो गए। सबने डाक्टर चू पिंगसे आह फुनकी भारी सिफारिश की— कि जब वह इतनी मेहनत करके लाओ मूके घरसे गाय ले आया है, तो उसके गाल सुजाकर दुगुने अवश्य करने चाहिए। किंतु डाक्टर चू पिंगका दूसरा ही तर्क था।

"अरे भाई, वह भोला बच्चा है। जंगल तक जाते जाते थक गया होगा। समझे? इसी लिए लाओ मूके घरको अपना घर समझ कर गाय ले आया। वह गरीब लड़का किसको क्या नुकसान पहुंचा सकता है?— कुछ नहीं, समझे? अरे, मैं ढोल पीट पीटकर कहता हूं कि एक दिन वह इतना बड़ा आदमी होगा कि उसके लिए पीकिंगमें हजारों फुट ऊंचा स्मारक बना होगा। उसपर आह फुनकी अकलमंदीके गीत खुदे होंगे—तुम्हीं लोग उन्हें कूल्हे मटका मटकाकर गाया करोगे—समझे?"

पड़ोसियोंने मुंह बिचकाए— जैसा कि सभी पड़ोसी अपने पड़ोसियोंके बच्चोंपर बिचकाते हैं। एक पड़ोसीने एक ब्रह्म-वाक्य कह सुनाया :

"उंह! सभी लकड़बग्घे अपने मां-बापके लाड़ले होते हैं!"

इसपर सीधेसादे डाक्टर चू पिंग खूब ठठाकर हंसे। आह फुनकी पीठ थपथपाकर उन्होंने कहा :

"बेटा आह फुन, मेरे दुखी हृदयके दीपक, इस कम्बख्त गायने सारा दूध बिखरा दिया है। जा, बाल्टी ले जा, और कुएंसे पानी भर ला।

रातको चावलोंके
ही पी लेंगे।"

आह फुन
लपका, मानो
मील दूर बने
भर लाएगा। ले
ही दूरपर एक
तालाब था।
पैरोंने उससे
इनकार कर दिया
आह फुनने उसी
बाल्टी भर ली।
का गंदा, हरा
लेकर घर आ गय
तो उसने थोड़ी
यह भी ध्यानसे
कि उस बाल्टीमें
पुराना जूता पड़
खा रहा था।
किसीने बेकार
समझकर तालाबमें
आह फुनकी बाल्टी

डाक्टर चू पि
जूतेको, बिना दांत
तो गांववालोंको

"मेरा लायक
लाया, लेकिन गां
सुहाता ही नहीं।
ही उसकी बाल्टीमें

डांटना तो
लिए एक शब्द भी

उन्हीं दिनों
दिया। इस बेमौस
घर बीमार पड़ने
साहबकी जो खिच
बजाए स्वयं भीगे
होना था। वह स्व
किटा-किट करने ल
उन्होंने आह फुनको
कहा :

"मेरे हीरा बेटे
मेरी खाटके नीचे
धधकाकर जला दे,

रातको चावलोंके साथ पानी ही पी लेंगे।"

आह फुन बाल्टी लेकर लपका, मानो अभी तीन मील दूर बने कुएंसे पानी भर लाएगा। लेकिन थोड़ी ही दूरपर एक गंदा सड़ा-सा तालाब था। आह फुनके पैरोंने उससे आगे जानेसे इनकार कर दिया। मजबूरन आह फुनने उसी तालाबमेंसे बाल्टी भर ली। वह तालाबका गंदा, हरा हरा पानी लेकर घर आ गया। बाल्टी तो उसने धोई ही नहीं थी, यह भी ध्यानसे नहीं देखा कि उस बाल्टीमें एक फटा-पुराना जूता पड़ा डुबकियां खा रहा था। उस जूतको किसीने बेकार और गला समझकर तालाबमें फेंक दिया होगा। वहांसे वह आह फुनकी बाल्टीमें सरक आया था।

"फुन बेटा, थोड़ी-सी लकड़ी और—अभी सरदी नहीं मिटी, रे!"

डाक्टर चू पिंगने जब बाल्टीमें एक झुर्रीदार जूतेको, बिना दांतोंके ही मुंह फाड़े हंसते हुए देखा, तो गांववालोंको कोसने लगे:

"मेरा लायक बेटा इतनी दूरसे पानी भरकर लाया, लेकिन गांव वालोंको उसका काम करना सुहाता ही नहीं। किसीने ईर्ष्याके मारे रास्तेमें ही उसकी बाल्टीमें जूता डाल दिया!"

डांटना तो दूर, उन्होंने आह फुनको इसके लिए एक शब्द भी नहीं कहा।

उन्हीं दिनों बसंतमें बरसातने हल्ला बोल दिया। इस बेमौसम बरसातके कारण लोग घर घर बीमार पड़ने लगे। उस बरसातमें डाक्टर साहबकी जो खिंचाई हुई, तो वह सूखे रहनेके बजाए स्वयं भीगे रहने लगे। हुआ वही जो होना था। वह स्वयं ठंड खाकर दांतोंसे किट-किटा-किट करने लगे और खाटपर लेट गए। उन्होंने आह फुनको बुलाया और बहुत प्यारसे कहा:

"मेरे हीरा बेटे, मेरी आंखोंके तारे, आ-आ, मेरी खाटके नीचे आग जला दे। खूब जोरसे धधकाकर जला दे, रे। मुझे लगता है कि मेरा यह बेकार चोला अपने दिन पूरे कर चुका। लाड़ले, जला, जला खूब जोरसे जला दे आग मेरी खाटके नीचे, रे!"

आह फुनने अपने पिताकी डाक्टरीकी पुरानी किताबसे कुछ पृष्ठ फाड़े और उसे पलंगके नीचेकी अंगीठीमें रखकर जला दिया। फिर वह आसपास ही खेलमें लग गया।

थोड़ी देरमें डाक्टर चू पिंगने अपने सिरके नीचेसे तकिया हटा, घरघराते गलेसे पुकारा—

"फुन बेटा, मेरी गरीब झोंपड़ीके खजाने, थो . . . थो. . . . थोड़ी-सी लकड़ी और—अभी सरदी नहीं मिटी, रे!"

आह फुनने कमरेमें इधर-उधर देखा। कहीं कोई जलाने वाली लकड़ी दिखाई ही नहीं पड़ रही थी। हां, कोनेमें डाक्टर पिंगकी सोनेकी मूठवाली छड़ी अवश्य खड़ी थी। तो फिर यही क्यों नहीं? जलेगी तो यह भी! उसने उसे लेकर अंगीठीमें झोंक दिया और वह वफादार छड़ी अपने मालिकके लिए कड़-कड़ करके जलने लगी।

थोड़ी देर बाद डाक्टर पिंग फिर घरघर कांपते हुए बोले, "आह, बेटा फुन, थोड़ी ललल... क्क्क्. . .ड़ड़ड़ी . . . औ . . . र . . !"

आह फुनने फिर एक बार बड़ी कठिनाईसे

कमरेमें चारों ओर नजर घुमाई। कोई लकड़ी-वकड़ी नहीं थी। हां, शेल्फपर पचासेक बांसकी कुप्पियां रखी थीं, जिनमें डाक्टर चू पिंगकी मेहनतसे पीसी हुई एकसे एक बेशकीमत दवाइयां भरी हुई थीं। कुछमें बिना पिसी दवाइयां थीं, जैसे एक कुप्पीमें एक मछलीकी हड्डियां सुरक्षित थीं। डाक्टरने उसके चूर्णसे एक मरीजकी रीढ़की हड्डीके दर्दको ठीक किया था। दूसरीमें घोंघेकी पिसी हुई सीपी थी। तीसरीमें कुछ नमक जैसा था। चौथीमें संतरेका चूर्ण और चूना था। छठीमें सुहागा और राख थी—मतलब यह कि सबमें कोई न कोई लाजवाब दवाई थी।

आव देखा न ताव, आह फुनने पहली कुप्पी उठाई और अंगीठीमें झोंक दी। कुप्पी एकदम सूखी थी। भकसे जल उठी। इसके बाद दूसरीका नंबर आया। फिर तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी—सबका बारी बारीसे दाह-संस्कार होने लगा। कुप्पियां न जलना चाहतीं, तो उनके भीतर रखी दवाई उन्हें जलनेपर मजबूर कर देती। अंगीठी खूब गरम हो गई। इसके बाद आह फुनने पचासवीं कुप्पी उठाई। उसमें डा. साहबकी एक खास दवाई थी—हुओ याओ। यानी उसमें ये बेढब दवाइयां थीं : गंधक, शोरा, कोयला, पोटाश—

अब, बच्चो, यह तो तुम जानते ही हो कि इन बेढब दवाइयोंसे क्या चीज बनती है। इनसे बनती है बारूद, जो उस समय तक संसारमें कहीं भी ईजाद नहीं हुई थी।

अब अपनी सांस रोक लो। अब यह पचासवीं लंबी-चौड़ी कुप्पी आह फुनने मजा लेते हुए, खाटके नीचे रखी अंगीठीमें डाली, तो पहली आगने झटपट कुप्पीको जलाना आरंभ कर दिया। जब तक कुप्पीके अंदर तक आग नहीं पहुंची, तब तक कुछ नहीं हुआ। उसके बाद—

धड़ाम— धूम—ब्रूम— ढूम — ढूं!

ओह! अरे आलसियोंके उस्ताद, क्या कर डाला तूने! पहले पूरी खाटके नीचे फैली अंगीठी उड़ी। उसके साथ खाट उड़ी, और खाट उड़नेके साथ साथ आह फुनके प्यारे पिताराम उड़ चले. . . छत फाड़ कर!

अब कुछ चीनी भाषाका स्वाद लो :

जोरजोरकी बारिश हो रही थी। उसी बारिशमें श्रीमती लाओ मू बाहर निकलीं और अपनी नाजोंसे पाली गोभीकी क्यारीकी तरफ दौड़ीं। डाक्टर चू पिंग छत फाड़कर उसी क्यारीमें जा गिरे थे। श्रीमती लाओ मूने उनकी इस हरकतपर अपने विचार इन शब्दोंमें प्रकट किए :

"हुन चांग तुंग हू सी!" (अरे बेअकल बुड्ढे खूस्ट घोटालेबाज!)

लेकिन डाक्टर चू पिंगने गोभीकी क्यारीकी ओर दया भावसे देखा। फिर अपने घरकी छतमें बने उस भंभाड़को देखा, जिसमेंसे होकर वह उस क्यारीमें आ गिरे थे। फिर बोले : "काई तान।" यानी हाय रे मैं! कितने अफसोसकी बात है!

और फिर आए वे ही पड़ोसी, जिनकी जबानोंमें अमृत भरा था। वे ही, जो डाक्टर चू पिंगको बहुत चाहते थे और उनकी हर मुसीबतमें काम आना अपना कर्तव्य समझते थे। उन्होंने कहा :

"इसमें कोई शक नहीं कि यह उसी नालायक,

बेहूदे, आलसी आह फुनकी करतूत है, मान्यवर डाक्टर साहब! आप ऐसा कीजिए कि कई मजबूत बांस मंगवाइए (क्योंकि एकसे काम चलनेवाला नहीं था) और बारी बारीसे हर एकको इस पाजी आह फुनकी कमरपर तोड़ना शुरू कर दीजिए—वरना किसी दिन यह आपकी जान तो लेगा ही, इज्जत भी ले बैठेगा।"

"कई मजबूत बांस मंगवाइए और इस पाजी की कमरपर तोड़ना शुरू कर दीजिए!"

"आह! अपने आह फुन बेटाको पीटूं! हाय, वह कितना भला लड़का है! मेरे दिलका चैन है। कितनी अच्छी तरहसे उसने मेरी खाटके नीचे आग जलाई और मुझे गरमी पहुंचाई!"

इसके बाद डाक्टर साहब लंगड़ाते हुए अपने घरके भीतर घुसे। आह फुन धमाकेके कारण 'सोया' पड़ा था। उसे जगाते हुए डाक्टर साहबने पूछा कि क्या बात हुई थी।

अब आह फुनको और चाहे जो कुछ कह लो था वह सच्चा। उसने कुछ भी नहीं छिपाया। सब कुछ बता दिया—किस तरह उसने पहले छड़ी ले आकर अंगीठीमें डाली, फिर दवाइयोंकी कुप्पियोंकी आफत आई— और किस तरह आखिरी कुप्पीने छत फाड़कर उसके पिताको बाहर फेंक दिया— वगैरा वगैरा।

डाक्टर चू पिगकी भौंहें सिकुड़ गईं। गालोंमें और माथेपर गड्ढे पड़ गए। पूर्ण ध्यानावस्थामें उन्होंने अपनी लंबी और संवारी हुई दाढ़ीपर हाथ फेरना शुरू किया। उन्होंने पहले अपने दाएं कंधेको छुआ, फिर बाएंको। फिर अपनी आंखोंकी पुतलियोंको गोल करके ऊपरकी ओर समेटा— छतका वह भंभाड़ दिखाई दिया, जहां अब भी उनके कपड़ोंका एक टुकड़ा झूल रहा था। पुतलियां नीची करके उन्होंने अपनी उस खाटके अवशेष देखे, जिनपर उन्होंने बहुत दिन आराम किया था। अपने कानोंको भी छुआ, जो अब तक उस धमाकेसे झनझना रहे थे। इसके बाद उन्होंने अपने महान बेटेको संबोधन किया :

"बेटा, एसा लगता है कि हम किसी महान् आविष्कारकी कगारपर आकर खड़े हो गए हैं। उन कुप्पियोंमेंसे किसी एक कुप्पीमें कोई ऐसी दवाई थी, जो दवाईसे भी ज्यादा बहुत कुछ थी। भगवान जाने कौन-सी कुप्पी थी वह! मगर उससे कोई दूसरा काम भी लिया जा सकता है। हो सकता है उसके कारण मनुष्यके पंख लग जाएं और वह भी उसी तरह उड़ने लगे, जिस तरह मैं उड़कर बाहर जा गिरा। जो भी हो, हम लोगोंको और दवाइयां बनानी होंगी, और प्रयोग करने होंगे— समझे?"

आह फुनने समझदारीसे सिर हिलाया।

अगले दिन डाक्टर चू पिगने अपनी दवाइयोंकी किताब खोली। उसमें दवाइयोंके प्रयोग और उनके भिन्न भिन्न मेलोंसे बने चूर्ण लिखे थे, जिनके भिन्न भिन्न गुण होते चले जाते थे। उस किताबको उन्होंने स्वयं लिखा था और वह आखिरी पृष्ठसे शुरू होती थी। सबसे पहला फारमूला था : मिर्च, फिटकरी और मेंढकके पंजे। तीनों दवाइयां लाई गईं और उन्हें मिलाकर चूर्ण बनाया गया। चूर्णको बांसकी कुप्पीमें रखा गया और कुप्पी आगमें रखकर आगको लगातार पंखा झला गया। खूब धुआं उठा और खूब गरमी फैली—लेकिन न कोई धमाका हुआ, न कोई उड़ा। यह दवाई लाल बुखारके अलावा और किसी कामकी नहीं निकली। सो डाक्टर चू पिगने सावधानीसे यह प्रयोग एक दूसरी किताबमें

(शेष पृष्ठ ७५ पर)

kissekahani.com

उर्दू-कथा

एक शलगम

दो भाई थे। बड़ा भाई बहुत अमीर था और छोटा भाई बहुत गरीब। बड़ा भाई घमंडी और बेरहम था और छोटा भाई नेक और दयालु।

दोनों इकट्ठे रहा करते थे। एक दिन बड़े भाईने छोटे भाईको कान पकड़कर अपने घरसे बाहर निकाल दिया और कहा, "जा, अपनी जमीनमें हल जोतकर कमा खा। मेरे घरसे अब तुझे गेहूंका एक दाना भी न मिलेगा।"

छोटे भाईने अपने बापकी बंजर जमीनमें हल जोतकर बहुत खाद डाली और वहां शलगम बो दिए। कुछ दिनों बाद शलगम उग आए। अब छोटा भाई बड़े आनंदसे शलगमके खेतके किनारे फिरा करता। वह दिलमें सोचता कि अब मैं भी अपने भाईकी भांति अमीर हो जाऊंगा।

शलगमोंकी सुंदर पंक्तियोंमें एक बहुत बड़ा शलगम उगा। वह बढ़ता ही गया, यहां तक कि मटकेसे भी कई गुना बड़ा हो गया—इतना बड़ा कि कोई आदमी उसे अकेला न उठा सकता था।

छोटा भाई इस शलगमको देख देखकर बहुत खुश हुआ करता। एक दिन उसने सोचा कि क्यों न मैं यह शलगम अपने नेक और दयालु बादशाहको भेंट कर दूं। वह इससे बहुत प्रसन्न होगा।

इस शलगमको एक आदमी तो उठा नहीं सकता था। उसने एक बहुत बड़ा छकड़ा मंगवाया और दो मजबूत बैल उसके आगे जोत दिए। फिर उसने अपने गांवके कुछ मित्रोंको बुलाया। उन सबने मिलकर उस शलगमको खेतसे उखाड़ा और बैलगाड़ीमें रख दिया।

अब छोटे भाईने बड़ी खुशीसे अपने छकड़ेको हांका और उसे महलकी ओर ले गया। महलके द्वारपर पहरेदार खड़ा था। पहरेदार उससे कहने लगा, "अरे भाई, बिना रोक-टोक क्यों अंदर घुसे आते हो? क्या बात है?"

छोटे भाइने जवाब दिया, "पहरेदारजी, बादशाह सलामतके लिए यह भेंट लाया हूं।"

पहरेदारने छकड़ेके चारों ओर घूमकर बड़े अचरजमें आंखें फाड़ फाड़कर शलगमको देखा। वह सोचने लगा—'हे भगवान! इतना बड़ा शलगम कहांसे आया?' इसके बाद वह खुशीसे दौड़ा दौड़ा महलके भीतर चला गया और बादशाहको समाचार दिया कि एक किसान एक बहुत बड़ा शलगम आपके लिए लाया है और वह शलगम इतना बड़ा है कि किसान उसे छकड़ेपर लादकर लाया है।

बादशाह अपनी बेगम, शहजादों और शह-

आदियोंके साथ
सबसे बड़े शलगम
दबाई। शहजादे
खुशीके तालियां ब
जब ये लोग उ
बेगमने उसे अपने
भीतर रखवा दिय
बुढ़िया मांको भी दि
कारण अधिक चल-

जब शलगम भी
नेक बादशाह कहने
बढ़िया और अति
इसे इनाम देकर म
इसके बाद
अशर्फियोंकी दो बो
भाई खुशी खुशी उन्हें
घर वापस चला गय
अब छोटा भाई

थोर की अद्भुत यात्रा (पृष्ठ ४९ से आगे)

दो घूंटमें इसे खाली करनेकी जरूरत पड़ जाती है। लेकिन तीसरा घूंट भरने वाला तो निरा दूध-पीता बच्चा ही समझो।"

थोरने कलसा हाथमें लेकर देखा। वह बहुत बड़ा तो था नहीं, हां जरा लंबा जरूर था। वह प्यासा तो था ही। उसने कलसा मुंहसे लगाया और एक लंबी घूंट इस तेजीके साथ भरी कि उसे लगा कलसा जरूर खाली हो गया होगा। लेकिन जब उसने होठोंसे हटाकर उसे आंखोंके सामने किया, तो उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह अब भी किनारे तक भरा हुआ था।

गुस्सेमें भरकर थोरने कलसेको फिर मुंहसे लगाया और गटागट, गटागट, गटागट—इतनी तेजी, फुरती और जोरसे घूंट भरनी शुरू की कि सागर भी हो तो खाली हो जाए। लेकिन इसके बाद जब उसने कलसेका मुंह फिर आंखोंके सामने किया, तो पाया कि उसका तरल पदार्थ मुंहके किनारेसे इतना कम नीचे उतरा था कि फरक ही मालूम नहीं पड़ता था।

उसने कलसा सेवकके हवाले किया और आगे पीनेसे इनकार कर दिया।

"अब बात साफ है," राजा उसका अपमान करता हुआ चुनासे बोला, "कि तुम उतने शक्तिशाली नहीं हो, जितना हम समझते थे। तुम इस दावमें तो पहले ही हार गए, मुकाबलेमें जीतना तो बहुत दूरकी बात है। अब और कोई जोर-आजमाई करना चाहते हो?"

थोर अबतक नहींसमझ पाया था कि कलसा उससे खाली क्यों नहीं हो पाया। आखिर वह वर्षाका देवता है और संसार भरका पानी उसके पेटसे निकलता है— फिर भी वह इस कलसेके तरल पदार्थका एक घूंट भी नहीं बना सका। उसने कहा :

"ठीक है। मैं दूसरी चीजपर जोर आजमाई करूंगा—हालांकि मुझे पूरा विश्वास है कि सभी देवताओंको मेरे पिए हुए घूंटपर आश्चर्य होता। खैर, अब आप किस चीजपर मेरा जोर आजमाना चाहते हैं?"

"ओह! बहुत आसान चीज है," राजाने उत्तर दिया। "हमारे यहांके बच्चोंके लिए तो यह रोजमर्राकी आम बात है। वे हंसते हंसते किसी बिल्ली या कुत्तेको जमीनसे उठा लेते हैं। मैं तुमसे इतनी जरा-सी बातपर जोर आजमानेको न कहता, लेकिन अब चूंकि मुझे यह यकीन हो गया है कि तुम वह आदमी ही नहीं हो जो मैं समझता था, इसलिए बस यही कर दो।"

राजाके यह बात कहते न कहते एक बड़ी भारी बिल्ली दौड़ती हुई हालके भीतर आई। थोरने उसके नीचे हाथ देकर उसे ऊपर उठानेकी कोशिश की। लेकिन बिल्लीने अपनी कमर कमानकी तरह ऐसे मोड़ी कि थोर उसका सिर्फ एक ही पैर जमीनसे उठा सका।

"मेरा भी यही खयाल था," राजाने नाक आधी ऊपर चढ़ाते हुए कहा। "बिल्ली बहुत बड़ी है और थोर एकदम कीड़ेकी तरह है—हम लोगोंसे इसका क्या मकाबला हो सकता है?" और वह ठहाका लगाकर हंसा।

"कोई बात नहीं," थोर आंखोंसे अग्नि बरसाता हुआ बोला। "मैं भले ही छोटा होऊं—लेकिन मैं चुनौती देता हूं कि कोई भी मेरे मुकाबले आकर कुश्ती लड़ ले।"

उत्तार्द-लोकीने दोनों तरफके आसनोंकी पंक्तिपर इस तरह दृष्टि दौड़ाई मानो वह उनमेंसे किसीको थोरसे कुश्ती लड़नेके लिए बुलाने वाला हो। फिर गरदन हिलाता हुआ बोला, "ओह! यहांपर कोई ऐसा नहीं है, जिसके लिए तुम्हारे साथ कुश्ती लड़ना बच्चोंका खेल न हो। खैर, अरे, कोई आकर मेरी बूढ़ी आया ऐलीको तो बुला लाओ। वही तुम्हारे साथ जोर-आजमाई कर लेगी। उसने बहुतसे 'पहलवानों' की धूल चटाई है।"

एक बुढ़िया कूंखती-कांखती दरबारके बीच आई। उसके चेहरेपर इतनी झुर्रियां पड़ी हुई थीं कि उसके नाक-नक्श मुश्किलसे ही दिखाई पड़ते थे। कमर कमानकी तरह झुकी हुई थी और मुंहमें दांत नहीं थे।

थोरने तुरंत आगे बढ़कर उसे धर जकड़ा। लेकिन जितनी ही उसकी पकड़ मजबूत होती जाती, उतनी ही वह मजबूतीसे जहां-की-तहां जड़ होती चली जाती। उसके पतले पतले हाथोंने थोरको इस तरह जकड़ लिया मानो कोई फौलादकी संडासी हो। उस जर्जर बुढ़ियाकी शक्ति प्रति पल इस तरह बढ़ती जा रही थी कि थोरका दम निकलनेको हो रहा था। थोरने इतना जोर लगाया कि उसके सारे रग-पुट्ठे तक फटनेको हो गए—और अंतमें नतीजा यह निकला कि उसका एक घुटना जमीनसे जा लगा। थोरका घुटना!

"बस बस, बहुत हुआ!" राजा चिल्लाया, और बुढ़िया जैसे कूंखती-कांखती आई थी, उसी तरह हिलती-डुलती, गड़गड़ गरदन हिलाती दरबारसे वापस चली गई। थोर जड़, चकित, अचंभित खड़ा था और सारे असुर उसकी ओर चुपचाप देख रहे थे। अब कोई जोर-आजमाई बाकी नहीं रह गई थी। उन लोगोंको बड़ी उदारतासे इस हारके बाद खाना-पीना परसा गया और उनकी खासी दावत की गई।

अगले दिन सुबह जब सब लोगोंने खूब डटकर नाश्ता कर लिया और चलनेके लिए तैयार हो गए, तो राजा

इस सुअवसर पर

उसे फ़ोरहन्स द्वारा दाँतों की ठीक ठीक रक्षा करने की सीख दीजिये

जब आप के बच्चे में ज्ञान प्राप्ति की इच्छा जागती है तो वह आप को अपना मार्गदर्शक बनाता है। आप से वह कितनी ही नेक बातें सीखता है। उन में से एक बात है फ़ोरहन्स द्वारा दाँतों की ठीक ठीक रक्षा करना– क्यों कि यह टूथपेस्ट मसूड़ों की खराबियों और दंतक्षय को रोकने में मदद करता है।

एक दंत चिकित्सक द्वारा निर्मित फ़ोरहन्स में मसूड़ों के लिए विशेष पौष्टिक तत्व हैं। यह आप के लिए अच्छा है और आप के बच्चे के लिए भी! दाँतों की तकलीफ़ों से बचने की उसे राह सुझाइये– यह शिक्षा उसे आज भी काम आयेगी और आगे जा कर भी। उसे हर रात और सुबह फ़ोरहन्स इस्तेमाल करने की आदत डालिये। आयुभर दाँतों की ठीक ठीक रक्षा करने की सीख देने का यही सुअवसर है।

फ़ोरहन्स द्वारा दाँतो की रक्षा करना सिखाने में उम्र की कोई क़ैद नहीं है।

मुफ़्त ! "दाँतो और मसूड़ों की रक्षा" नामक रंगीन सचित्र पुस्तिका

१० भाषाओं में प्राप्त है। डाक खर्च के लिए लिफ़ाफ़े पर १० पैसे का टिकट भेजिये:– मैसर्स डेण्टल एडवायज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१.

नाम .....

पता .....

*जिस भाषा के चाहिये उस के नीचे कृपया लकीर खींच दीजिये : हिंदी, अंग्रेज़ी, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगाली, तामिल, तेलुगु, मलयालम या कन्नड़।

आप के बच्चे के हित के लिए शायद यह पुस्तिका सबसे ज्यादा ज़रूरी हो सकती है! P. 10

फ़ोरहन्स टूथपेस्ट–एक दंत चिकित्सक द्वारा निर्मित

CMGM-18-8 HIN

आजादी है

भले किसी की मत मानो,
जो जी में आये ठानो,
लेकिन—
तोड़-फोड़ को,
उठा पटक को,
मानो मत—बरबादी है!
यह कैसी आजादी है!

—यादराम 'रसेन्द्र'

kissekahani.com

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षोंसे 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

चूहों की सेना

पीकिंग से चूहों की सेना
जब नेफा में आई,
हिम-पर्वत पर उन्हें अचानक
बिल्ली पड़ी दिखाई।

चीं-चीं चीं-चीं चिल्लाए वे,
नहीं किसी की खैर,
सारे चूहे भागे पीकिंग
रख कर सिर पर पैर!

—रामभरोसे गुप्त 'राकेश'

क्या उसकी उच्च शिक्षा एक समस्या है ?

हां यह तो है ही, परन्तु आज की इस होड़ की दुनियां में इसके बिना वह रह ही कैसे सकता है। इसके बारे में "सेन्ट्रल" से परामर्श कीजिये जिसके पास भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बचत की अनेक योजनायें हैं।

दि सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया लि.

रजि. कार्यालय : महात्मा गांधी रोड, फोर्ट, बम्बई १.

बी. सी. पटेल —जनरल मैनेजर

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ६१ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगितामें जिन तीन चित्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां प्रकाशित किया जा रहा है। पुरस्कार विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं :

- गोविन्दलाल वश्य, द्वारा श्री रामप्रसाद रंगवाले, ४३ । ७७ धोबी मोहाल (चौक), कानपुर।
- शंकरदयाल, ११० । १२ अशोक नगर, ८० फीट रोड, कानपुर।
- हरपाल डिल्लन, द्वारा श्री ए. एस. डिल्लन, ७–बी, न्यू प्रोजेक्ट, ए. एफ. पालम, देहली कैंट-१०।

यहां प्रकाशित दोनों चित्रोंकी पृष्ठभूमियोंको चित्रित करनेमें दोनों प्रतियोगियोंने ही अपनी सूझबूझका अच्छा परिचय दिया है। गोविन्दलाल वश्यने ऊपरके चित्रमें सघन वनमें सन्नाटे से भरी चांदनी रातका वातावरण पैदा किया है जो परियोंके नृत्यके लिए बहुत उपयुक्त है। नीचेके चित्रमें शंकरदयालने पृष्ठभूमिमें बर्फसे ढकी पहाड़ोंकी चोटियां दिखाई हैं। आकाशमें उड़ते पक्षी और हल्का हल्का उजाला दिखाकर उसने सूरज निकलनेसे पहलेका वातावरण पैदा किया है। ऐसे ही समयमें परियां रात भर नाच-गाकर वापस परी लोकको जाती होंगी।

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमें से इन लोगोंके प्रयास संतोषजनक रहे :

अजित सिंह, झरिया; कुमारी रत्ना सरकार; लखनऊ–४ ; कुमारी सुनीता पुर्वार, खामगांव; राकेश अग्रवाल, इलाहाबाद; मधुकरराव कदम, उज्जैन; कुमारी श्यामा सूद, नई दिल्ली; कुमारी रीता चोपड़ा, इलाहाबाद; सुशीलकुमार, रुद्रप्रयाग; सुभाषचंद्र गुप्ता, लखावटी; कुमारी सुषमा साहू, कलकत्ता–७; राजेशकुमार गोस्वामी, भसपुरा; कुमारी साधना गुप्ता, मुजफ्फरनगर; सुनीलकुमार, नई दिल्ली; राजेन्द्रकुमार गुप्ता, बांदा; अनिलकुमार श्रीवास्तव, कानपुर तथा श्यामप्रसाद, निजामहीनपुर। ●

कॅड्बरिज़ अद्भुत लोक
न.१

उत्तरी आईलैंड की 'नेफिला' नामक मादा जाला मकड़ी १८ सेंटीमीटर चौड़ी होती है। इसके इतने बड़े जाल में छोटे-छोटे पक्षी तक फंस जाते हैं! इस जाति की नर मकड़ी मुश्किल से ढाई सेंटीमीटर चौड़ी होती है, और अपनी जान बची रहे, इसलिए वह अपनी तगड़ी मादा मकड़ी की पीठ पर सवारी करता है।

दुनिया की सब से बड़ी बत्तख (करकैटा) 'कामोदो' है, जिस की लंबाई ३ मीटर है। यह लेसर सनडेश (इंडोनेशिया) में पायी जाती है। इस का वजन १३५ किलो होता है। इस जाति की बत्तखें हिरण और जंगली सूअर जैसे तेज जानवरों का पीछा कर के उन्हें खा जाती है।

विशेष समारोहों और शव-यात्रा के समय, पुराने जमाने में मिस्र के शाही खानदान के लोग नकली दाढ़ी लगाया करते थे। इसे 'पॉस्टेश' कहा जाता है। तब यह सार्वभौमिकता की निशानी मानी जाती थी। यहां तक कि रानी भी नकली दाढ़ी लगाया करती थी फ़र्क इतना कि उसकी दाढ़ी सोने की हुआ करती थी।

मिल्क चॉकलेट बहुत ही ठोस रूप में खाद्य-गुणों से भरपूर आहार है। यह इतना पौष्टिक और संतुलित है कि उत्तर ध्रुव के खोजी एवं पहाड़ों पर चढ़ने वाले लोग अपने साथ मिल्क चॉकलेट ले जाते हैं। इसके अलावा, ज्यादातर देशों में सेना को संकटकालीन राशन में चॉकलेट दिये जाते हैं। याद रखिये कि हर कॅड्बरिज मिल्क चॉकलेट दूध के गुणों से भरपूर है।

मधुर जीवन के लिये कॅड्बरिज़!

बिजनौर

दिलीप और उसके साथी

साँप और सीढ़ियाँ खेलने लगे

आलसियों का उस्ताद

(पृष्ठ ५९ से आगे)

लिख लिया और पहली किताबका दूसरा पन्ना खोला।

इसके बाद घोंघेकी सीपी और मदिरा मिलाई गई। बेकार। शार्क मछलीके पाखे और टाटरी। निरर्थक। दिनपर दिन बीतते गए और डा. चू पिंग संतोष और लगनके साथ प्रयोगपर प्रयोग करके अपनी नई किताब भरते गए। आखिरकार मेहनत रंग लाई—हुओ याओ यानी वही लाजवाब मिश्रण—गंधक, शोरा, पोटाश और कोयलेका तैयार हो गया। चीनी कहते हैं फान केवी यानी विदेशी राक्षसोंने इसे बारूदका नाम दिया। डाक्टरने उसकी एक बड़ी-सी कुप्पी बनाई। उसे आगमें रखा और उसके ऊपर मुंह करके जोर जोरसे फूंकने लगे। कुछ सेकिंडोंके लिए कुप्पी आगपर पड़ी सीझती-कड़कड़ाती रही और डाक्टर साहब और जोरसे फूंक मारनेके लिए अंगीठीके ऊपर झुक गए।

धड़ाम-धूम, ब्रूम, डाम— डू!

और डाक्टर चू पिंग फिर एक बार उड़ चले।

अब यह संयोगकी बात है कि धमाकेसे पहले बूढ़ा पड़ोसी लाओ मू अपनी गायका दूध दुहने बैठा था। धमाकेके एक मिनिटके बाद वह दूध नहीं दुह रहा था। अपनी प्यारी जान बचानेके लिए वह उत्तरकी ओर भागा जा रहा था। उसकी [illegible] अपनी जान बचानेके लिए दक्षिणकी [illegible] भागी जा रही थी। डाक्टर पिचकी हुई [illegible]टी और टूटे हुए स्टूलके बीच चित पड़े थे।

[illegible] पांच मिनिटमें डाक्टर साहबको होश आ [illegible]। बूढ़ा लाओ मू आधे घंटेमें वापस आया। [illegible] गाय इसके बाद कभी दिखाई ही नहीं दी और उसका वापस लौटना मुश्किल ही मालूम होता है।

होशमें आते न आते डाक्टर चू पिंग लपक-[illegible]र उठे और झपककर घरमें घुस गए। वहां [illegible]ाह फुन इतमीनानसे बैठा पान-पू-ताओसे खेल [illegible]हा था। यह मदारियोंका एक लकड़ीका बना [illegible]ोटा-सा आदमी होता है। इसके पांव गोल होते [illegible] और हाथ लंबे होते हैं। यह हमेशा सीधा-सतर [illegible] रहता है। चाहे इसे आगे लुढ़काओ, चाहे [illegible]ी-यह फिर तनकर सीधा खड़ा हो जाता है।

आह फुनके लिए उसके पिताराम और अपने खिलौनेमें कोई खास फर्क नहीं था। उसने संतोष-के साथ पूछा : "क्या बात हुई थी, बापू?"

"आह! आह फुन! मेरे हीरे, मेरे मोती, मेरे संतरे, मेरे लाल—हो गई ईजाद। हुओ याओ ही वह महान दवाई है। इससे राक्षस डरकर भाग जाएंगे। सभी जानते हैं कि बूढ़ा लाओ मू प्रेता-त्माओंसे पीड़ित है। लेकिन वह इससे ऐसा डर-कर भागा कि कुछ न पूछो। और उसकी वह दुष्टात्मा गाय, ऐसी डरकर भागी कि वापस ही लौटकर नहीं आई। इसमें अब कोई संदेह नहीं रहा कि हुओ याओ राक्षसोंके लिए डरावनी दवाई है और हम और तुम इसके आविष्कारक हैं। अरे मेरे महंगे पूत, अब हम प्रसिद्ध हो जाएंगे। हमारा नाम होगा। अबसे हजारों साल बाद भी लोग हुओ याओको राक्षसोंको भगानेके लिए जलाएंगे और हमारा नाम याद रखेंगे।"

और इससे बड़ी भविष्यवाणी और क्या हो सकती है? हुओ याओ अब भी छोटी छोटी कुप्पियोंमें, कागजकी कुप्पियोंमें भरी जाती है और उसके फ्यूजमें आग लगाई जाती है और वह 'पट पट' करती है और धमाकेके साथ उड़ती-उड़ाती आलसियोंके उस्ताद आह फुन और उसके पिताका नाम रोशन करती है। ●

(रूपांतर : विनोदकुमार)

जीने की कला (पृष्ठ २५ से आगे)

दौड़कर उनकी खुशामद व सेवाएं करते हैं। लेकिन ये सब काम तब होते हैं, जब उनकी जेबमें न अपना धन होता है न दूसरेका।

वह जीवन भर परेशान रहे हैं, भूख और अभावके भयसे ग्रस्त रहे हैं और अपमानित होते रहे हैं। कभी कभी उनपर बड़ी दया आती है। फटकार भी उनपर कम नहीं पड़ती। लेकिन प्रलोभनोंसे लड़ना उनके बसका काम नहीं। जल्दी जल्दी उन्हें अपने मेहरबान बदलने पड़ते हैं। बड़े बड़े आदमी सदा उनके अध्यवसाय और परिश्रमको देखकर उन्हें आगे बढ़ानेको तैयार रहे हैं। लेकिन बहुत जल्दी उनकी स्थिति उन घरोंमें भूतकी स्थितिके समान हो जाती है। हर कोई उन्हें देखकर डर जाता है।

और वह ऐसे लगते हैं जैसे सिर्फ दस ग्राम दिलके साथ जी रहे हों। जिनमेंसे जाने कितनी बार कुछ मिली-ग्राम और झड़ जाते हैं।

यदि तुम सवा किलोका दिल चाहते हो, तो तुम्हें हर वह काम छोड़ देना होगा, जो अपने स्नेहियों, परिजनों-के सामने करनेमें तुम्हें हिचक होती है। इसके बिना सारी पढ़ाई, सारी डिग्रियां बेमानी और बेजान हैं। ●

खिलौनों का डिब्बा

पिन-चक्कर

— अरुणकुमार

लो, बच्चो, इस बार एक बहुत मजेदार खेल हम तुम्हारे लिए खोज कर लाए हैं।

एक जूतोंका डिब्बा लो। यह मजबूत और मोटे गत्तेका होना चाहिए, कागज जसे गत्तेका नहीं। सामनेके पृष्ठपर दिया हुआ चित्र हाशिए-की रेखापर काटो। इसके पीछे गोंद लगाकर, नमूना आकृति-१ की तरह, जूतोंके डिब्बेके ऊपर चिपका दो। अब बीचोंबीचके काले बिन्दुपर एक साधारण पिन कीलकी तरह गाड़ दो। इस पिनमें आकृति-१ में दिखाए अनुसार कोई हेयर पिन या सेफ्टी पिन इस तरह फंसा दो कि वह पिनके सहारे घूम सके। एक ताशकी गड्डी भी चाहिए।

अच्छा, खेल तो तुम्हारा तैयार हो गया। अब इसे खेला कैसे जाए? इसे खूब मन लगाकर समझो।

नमूना आकृति-२ को ध्यानसे देखो। अगर अपने डिब्बेको बीचमें रख लो, तो क्या तुम ताश के पत्ते इस आकृति-२ की तरह, डिब्बेको चारों ओर फैला सकते हो? — फर्शपर या मेजपर।

ऐसा करो—पहले ताशकी गड्डी अच्छी

नमूना आकृति-१

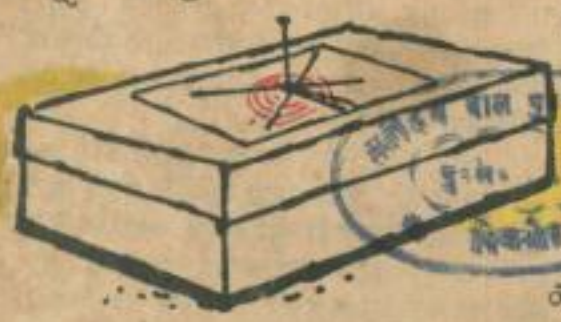

नमूना आकृति-२

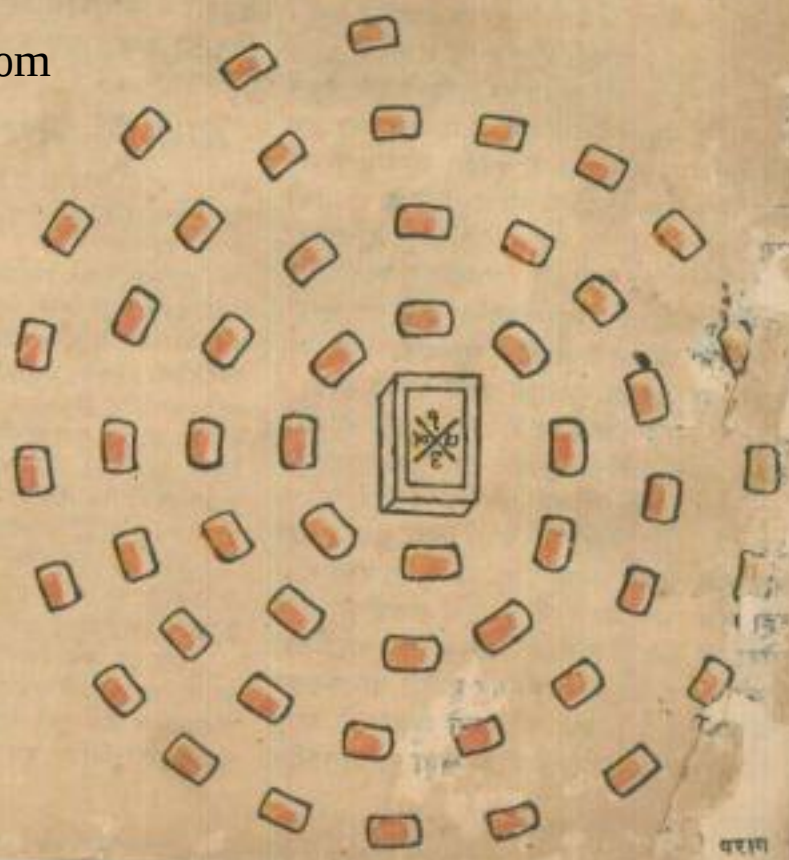

kissekahani.com